ऋषि प्रसाद

द्विमासिक

: ३ | जनवरी-फरवरी १९९३ हरि ॐ | अंक : १६

सदैव प्रसन्न रहना ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है।
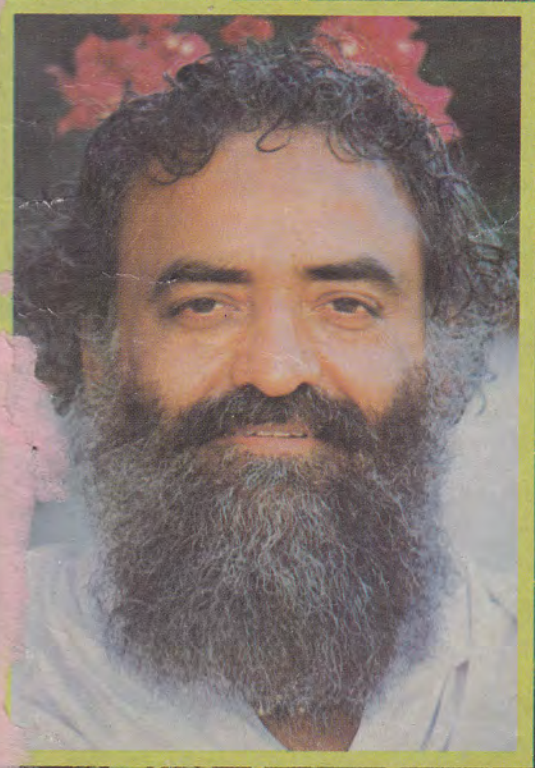
पूज्यपाद आसारामजी बापू
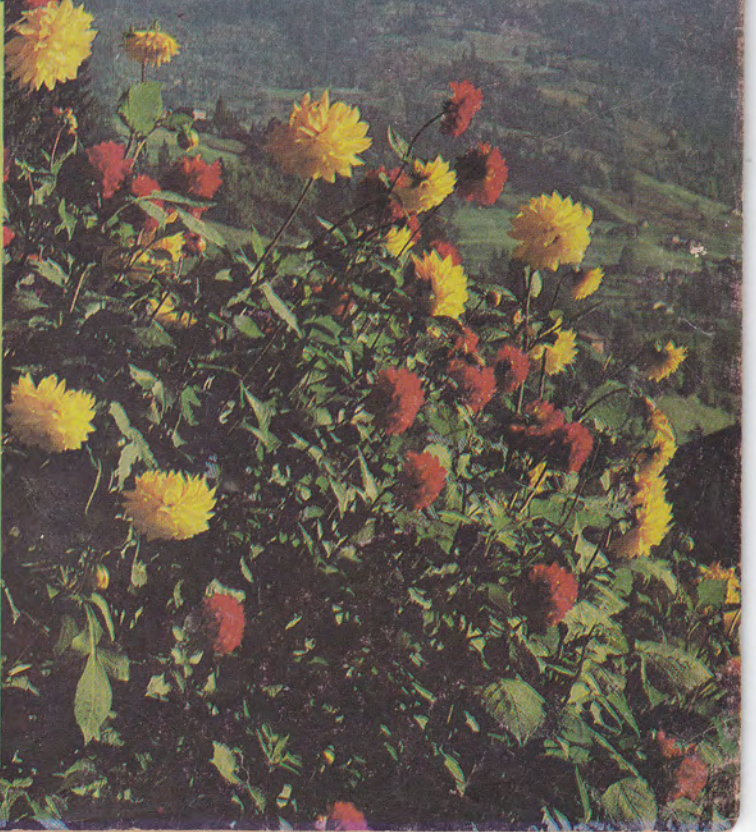
सदैव प्रसन्न रहना ईश्वर की सर्वोपरि भक्ति है।

वर्ष : ३

अंक : १६

जनवरी-फरवरी १९९३

शुल्क वार्षिक : रू. २५/-
आजीवन : रू. २५०/-
परदेश में वार्षिक : US $ १५ (डॉलर)
आजीवन : US $ २०० (डॉलर)

* कार्यालय *

'ऋषि प्रसाद'
श्री योग वेदान्त सेवा समिति
संत श्री आसारामजी आश्रम
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५
फोन : ४८६३१०, ४८६७०२

परदेश में शुल्क भरने का पता :

International Yoga Vedanta Seva Samiti
8 Williams Crest,
Park Ridge, N.J. 07656 U.S.A.
Phone : (201) - 930 - 9195

टाईप सेटींग : फोटोटेक्स्ट
प्रकाशक और मुद्रक : श्री के. आर. पटेल
श्री योग वेदान्त समिति,
संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा, साबरमती,
अहमदाबाद-३८०००५ ने
अंकुर ऑफ्सेट, गोमतीपुर, अहमदाबाद में
छपाकर प्रकाशित किया।

सदस्य का नाम :						
स्थायी सदस्य क्रमांक :						

अनुक्रम

'ऋषि प्रसाद' हर दो महीने में ९ वीं तारीख को प्रकाशित होता है।

'संसरति इति संसारः ।' जो सरक रहा है वह संसार । संसार असार है । शरीर रोगों का घर है । मन मलिन है । बुद्धि विक्षिप्त है । चित्त चंचल है । मृत्यु नित्य नजदीक आ रही है । ऐसे अवसर पर मनुष्य का कर्त्तव्य है असार संसार से मोह-माया, अभिमान हटाकर परमात्मा से मन जोड़ लेना, अपने वास्तविक स्वभाव को जगाना । अपने शरीरधर्म का नहीं, स्वधर्म का पालन करना है ।

'कर्तव्यो धर्मसंग्रहः ।'

स्वधर्मरूपी पुरुषार्थ का संग्रह, आचरण, अनुष्ठान करना ही कर्त्तव्य है ।

आप जगे, औरों को जगाये वह पृथ्वी पर का देव है । पूज्य श्री गुरुदेव द्वारा आदिवासी जागृति, स्वधर्मनिष्ठा, बाल-विकास, नारी-उत्थान के कार्यक्रम... एक तौर पर अभियान ही चलाये जा रहे हैं । पूज्य गुरुदेव ने अपना तन-मन-धन जनता-जनार्दन के सर्वांगीण उत्कर्ष में लगा दिया है । फलतः विद्यार्थी शिविर के माध्यम से हमारे बच्चों में धर्म, संस्कृति, पुरुषार्थ, स्नेह, सद्भाव, माता-पिता की सेवा, ब्रह्मचर्य आदि सद्गुणों का विकास होता है । वेदान्त शक्तिपात साधना शिविरों का ऐसा प्रभाव है कि अनेकों के गुमराह जीवन सही दिशा पर लगे हैं, कई गृहस्थों ने ब्रह्मचर्य की दीक्षा ली है । महिलाओं में भी सराहनीय विकास कार्यक्रम हुए हैं । अनसूया आश्रम की महिला साधिकाएँ समाज के कोने-कोने में जाकर महिला-उत्थान और भक्ति, प्रेम, सत्संग की रसधार बहाने का प्रयास कर रही हैं । दूसरी ओर आश्रम के पुरुष साधक गाँव-गाँव जाकर स्कूल-कॉलेजों में योगासन, यौवन सुरक्षा, पुरुषार्थ के पाठ पढ़ाते हैं ।

आश्रम से संबंधित श्री योग वेदान्त सेवा समिति की सैंकडों शाखाएँ गाँव-गाँव में, मोहल्ले-मोहल्ले में विडियो सत्संग, प्रभातफेरी तथा संकीर्तन यात्राओं का आयोजन करती हैं ।

क्यों न हम भी जहाँ हैं वहीं, हमारे ही परिवार में, परिसर में, गाँव में, शहर में, जन-जागृति, हरिनाम कीर्तन, सत्संग, बाल-विकास, योगासन, महिला सत्संग आदि कार्यक्रमों का आयोजन कर स्वपरकल्याण का कार्य करें? आज के युग में भोग-विलास की आँधी चल रही है । शोषण, दुराचार, हिंसा के तांडव खेले जा रहे हैं, संस्कृति और धर्म का दुष्टों द्वारा विध्वंस हो रहा है तो दूसरी ओर परमात्मा के नित्य अवतार समान संत, सद्गुरुओं के प्रयासों से धर्मभीरुता, स्वधर्म-निष्ठा, सेवाभाव का प्रचार-प्रसार भी हो रहा है । हम भी अपने सामर्थ्य के अनुसार अपना तन-मन-धन इस आत्म कल्याण के कार्य में लगाकर जीवन सफल करें । इस पवित्र दैवी पथ पर चलकर कोई अपना मार्ग तय करे ओर इसमें हम सहभागी बनें इससे बड़ा सौभाग्य और क्या हो सकता है ?

अतः आप हम सभी यथायोग्य प्रभातफेरी, कीर्तनयात्रा, महिला सत्संग द्वारा अथवा घर-घर लोगों के हाथों में 'ऋषि प्रसाद' पहुँचाने की सेवा करके ईश्वर और संतों के दैवी कार्य में साझेदार हो सकते हैं । यह सुविदित है कि इस प्रकार ईश्वर और संतों के दैवी अनुभव में भी साझेदार हो जाते हैं । अतः आज से ही कोई न कोई पवित्र संकल्प कर लें.......

विनीत,
श्री योग वेदान्त सेवा समिति

परमहंसों की प्रसादी

– पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

अपनी आत्मा से भिन्न सत्ता का स्वीकार करना यह पराधीनता है। आत्मा से भिन्न सत्ता न मानना यह विचार है। भिन्न सत्ता का प्रभाव तोड़ देना साधना है।

आज हम आत्मविस्मृति को सहयोग नहीं देगें, आत्मस्मृति को जगायेंगे। अपनी आत्मा से भिन्न सत्ता का अस्वीकार करेंगे। आवश्यकताओं का तथा आसक्ति का अस्वीकार करेंगे। अपनी आत्मसत्ता का स्वीकार करते जायेंगे। उस प्यारे आत्मदेव का प्रेम प्रकट करते जायेंगे। उसी आत्म-सत्ता में विश्रान्ति पाते जायेंगे। उसी आत्मदेव में अपने आपको जगाते जायेंगे।

'मोह सकल व्याधिन कर मूला।'

मोह सब व्याधियों का मूल है। उसीसे भव का शूल उत्पन्न हो रहा था। अब इस मोह की चद्दर को हटाने का प्रयास करेंगे। आत्मशक्ति की अग्नि सबके भीतर छुपी है लेकिन अविद्या और वासना की राख से ढँकी है। उस आत्मशक्ति की आग को जगाने के लिये अविद्या की राख को हटायेंगे। वासना की राख को हटायेंगे तो आत्मबल की अग्नि प्रतीत होगी, ब्रह्मविद्या की ज्योति जगमगा उठेगी जिससे सारे कर्म उसी समय भस्मीभूत हो सकते हैं।

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा॥

'हे अर्जुन ! जैसे प्रज्ज्वलित अग्नि ईंधनों को भस्ममय कर देती है, वैसे ही ज्ञान रूपी अग्नि सम्पूर्ण कर्मों को भस्ममय कर देती है।'

(भगवद्गीता : ४.३७)

इस अविद्या की चद्दरिया का एक-एक धागा निकालकर तुम भस्मीभूत करो चाहे पूरी की पूरी चद्दर को जला दो, मरजी तुम्हारी। आत्मज्योति जलाना है यह हमारा उद्देश्य है।

अपनी आत्मा पर पूरा विश्वास करते जायँ। आत्मदेव को पूरा प्यार करते जायँ। अपने अन्तर्यामी परमात्मा को अपना अहं पूरे का पूरा अर्पित करते जायँ। अपना 'मैं' उस निजस्वरूप में अर्पित करते ही तुमको एहसास होगा कि तुम अनाथ नहीं हो... तुम एक ही शरीर में नहीं हो... तुम एक ही जाती में नहीं हो... तुम एक ही आकृति में नहीं हो... तुम एक ही रीतभात में नहीं हो... तुम एक ही परिस्थिति में नहीं हो... लेकिन अनंत-अनंत रीतभातें, अनंत-अनंत परिस्थितियाँ जिस सच्चिदानन्द स्वरूप से प्रतीत होती हैं, जिसमें स्थित हैं, जिससे देखी जाती हैं वह साक्षी दृष्टा तुम हो।

अपने मोह को छोड़ते ही, देह को 'मैं' मानने की भूल को छोड़ते ही, तुम अपने आपमें पहुँचते जाओगे। अपने आपकी खबर तुम्हें मिलती जाएगी। अपने आपमें विश्रान्ति मिलती जाएगी। अपने आपमें प्रीति प्रकट होती जाएगी। अपनी सत्ता का स्वीकार होता जाएगा।

अपनी आत्मा से भिन्न सत्ता का स्वीकार करना यह पराधीनता है। आत्मा से भिन्न सत्ता न मानना यह विचार है। भिन्न सत्ता का प्रभाव तोड़ देना साधना है।

अपनी आत्मसत्ता का अस्वीकार सारे दुःखों का मूल है, सारे बन्धनों का मूल है, सारे दुर्भाग्यों का मूल है। अपनी आत्मसत्ता से इतर का अस्वीकार करना यह विचार है, अपनी आत्मसत्ता का स्वीकार करना यह ज्ञान है और अपनी सत्ता में टिक जाना यह साक्षात्कार है।

तुम्हारी आत्मा से अन्य कोई बढ़कर नहीं है, कोई श्रेष्ठ नहीं है। जो-जो बढ़कर और श्रेष्ठ दिखते हैं वे अपनी

सत्ता में जगे हैं। वे चाहे श्रीकृष्ण हों, श्रीराम हों, शंकराचार्यजी हों चाहे लीलाशाहजी बापू हों, उन महापुरुषों का और अवतारों का यही कहना है कि तुम अपनी आत्मसत्ता को स्वीकार कर लो, बेड़ा पार हो जाएगा।

अपने मोह को छोड़ते ही, देह को 'मैं' मानने की भूल को छोड़ते ही, तुम अपने आपमें पहुँचते जाओगे। अपने आपकी खबर तुम्हें मिलती जाएगी। अपने आपमें विश्रान्ति मिलती जाएगी। अपने आपमें प्रीति प्रकट होती जाएगी।

मानी हुई गलती का अस्वीकार, मानी हुई ममता का अस्वीकार, मानी हुई आवश्यकताओं का अस्वीकार कर दो और जानी हुई आत्मसत्ता को स्वीकार कर लो। तुम्हें यह महसूस होना चाहिए कि तुम्हारी सत्ता के बिना आँख देख नहीं सकती, कान सुन नहीं सकते। तुम्हारी सत्ता के बिना मन के संकल्प उठ नहीं सकते। तुम्हारी सत्ता के बिना बुद्धि के निर्णय आ नहीं सकते। तुम्हारी सत्ता के बिना प्राणकला चल नहीं सकती, प्राणकला को भूख-प्यास लग नहीं सकती। तुम्हारी सत्ता से ही यह सारी मशीनरी चल रही है। अत: आप अपनी सत्ता को स्वीकार कीजिये।

वह सत्ता इस तन को चला रही है, मन को चला रही है, आंखों को और कानों को देखने-सुनने की शक्ति दे रही है। शरीर के रोम-रोम को वह सत्ता संचालित कर रही है।

जो सत्ता शरीर को संचालित कर रही है वह मैं हूँ और जो संचालित हो रहा है वह माया है। अपनी सत्ता का स्वीकार करते जायँ। अपने से गैर यह जो देह है उसकी सत्ता का अस्वीकार करते जायँ। अपने सम्बन्ध का स्वीकार करते जायँ, गैर के सम्बन्ध का अस्वीकार करते जायँ।

अपनी आत्मसत्ता का स्वीकार ही जीवन जागृति है। गैर की सत्ता का प्रभाव ही जन्म-जन्मान्तरों की यात्रा है। अपनी सत्ता में विश्रान्ति आत्मलाभ कराती है और गैर सत्ता में विश्रान्ति मोह, ममता और विकारों को जन्म देती है। अपनी सत्ता में बार बार गोता मारो कि :

''मैं आनन्द स्वरूप हूँ। मैं शान्त स्वरूप हूँ। मैं चिदानन्द स्वरूप हूँ।''

आज हम दृढ़ संकल्प करेंगे : अपनी आत्मसत्ता का स्वीकार करेंगे। अपनी प्रेममयी, आनन्दमयी, शक्तिमयी, चैतन्यमयी गौरवमयी निज हकीकत को हम जानेंगे और उसीका स्वीकार करेंगे, उसीमें खेलेंगे।

अपने आपमें रमते जायँ। अपना आपा रोम-रोम में रम रहा है इसीलिए उसका नाम राम है। स्वीकार करते जायँ कि आप स्वयं राम हैं। शरीर की गैर सत्ता को न स्वीकारें। रोम-रोम में मैं रम रहा हूँ इसीलिये मेरा नाम राम है। मैं खुद ही खुद हूँ इसलिए मेरा ही नाम खुदा है। मैं इन्द्रियों के अंजन में नहीं आता हूँ इसीलिये मेरा नाम निरंजन है। मेरी देह का नाम कुटुम्बियों ने चाहे जो रख लिया हो लेकिन मेरा नाम तो वही है जो शास्त्रों में गाया जाता है। में अपनी सत्ता का स्वीकार कर रहा हूँ।

किसी आत्मवेत्ता सद्गुरु की रहमत एवं सहयोग लेकर सत्यस्वरूप ईश्वर का साक्षात्कार इसी जन्म में कर लो। फिर आपके पदचिन्ह ठीक जगह पर पड़ेंगे। आप बाहर से चाहे कैसे भी वेश में हो लेकिन भीतर से वास्तव में साधू बन जाएँगे।

साधु ते होवे न कारज हानि...।

फिर आपकी हर चेष्टा से विश्व मंगलमय ही होता रहेगा।

* एक माला जपने पर भी भक्ति बढ़ती है। यदि कहो कि ऐसा मालूम क्यों नहीं होता तो इसका कारण यह है कि जीव अत्यन्त भूखा है, इसीसे उसे थोड़ा भजन करने पर उसका कोई प्रभाव नहीं जान पड़ता।

* दुनिया का चिंतन करते हुए तुम ज्ञानी या भक्त बनना चाहो तो यह त्रिकाल में भी नहीं हो सकता। भगवन्नाम इसीलिये अखंड रूप से जपा जाता है जिससे दुनिया का चिंतन न हो।

मेहसाना में दिव्य सत्संग समारोह

उत्तर गुजरात की राजधानी तुल्य मेहसाना नगर में भक्तों, साधकों, विभिन्न धर्म, संप्रदाय के सज्जनों की कुछ वर्षों से माँग थी कि पूज्यपाद श्री बापू का सत्संग समारोह मेहसाना में हो। अथक पुरुषार्थ, सामूहिक हिम्मत, अनेक हाथों की सेवा और सबको हरिरस गुरुज्ञानरस पिलाने की महेच्छा के परिपाकरूप ही ऐसे महान कार्य साकार बनते हैं।

महान कार्य के निर्माण के लिए आवश्यक सब साधन उपलब्ध हो गये और दि. ३१ अक्तूबर से ५ नवम्बर तक मेहसाना के एरोड्रोम मैदान में सत्संग समारोह का आयोजन हुआ। एक भव्य सांस्कृतिक धार्मिक प्रदर्शनी और बाल नगरी का भी आयोजन हुआ। एरोड्रोम की चार लाख वर्ग फुट की जगह में हरिभक्तों को सत्संग का रसास्वादन कराने की व्यवस्था हुई। पूज्य बापू का रजततुला महोत्सव भी मनाया गया।

इस दिव्य पावन प्रसंग पर हजारों संतप्त दिलों को हरिनाम की गंगा में स्नान करानेवाले, दुःखी को दिलासा, हारे हुए को हिम्मत, निराश को आशाएँ, भक्तों को भक्ति, जिज्ञासु को ज्ञान, मुमुक्षु को मोक्ष का मार्ग दिखानेवाले, प्राणीमात्र के परम हितैषी, सबको मनभावन, मनमोहक वाणी में श्रद्धालु विशाल जनमेदनी के बीच अपने आत्मानुभव और समाज की वर्तमान भूख एवं आवश्यकता का सामंजस्य स्थापित करते हुए पू. बापू बोले :

"आज मेहसाना की भूमि पर भगवद्गीता, श्रीमद्भागवत्, रामायन, उपनिषद, संत–अनुभव और पूरे विश्व के महापुरुषों के दिव्य अनुभव सुनने का अच्छा अवसर हमें साधकों के पुरुषार्थ से प्राप्त हुआ है।

मनुष्य के जीवन में से अगर सत्संग को निकाल दिया जाय तो उसका जीवन पशु से भी खराब हो जाता है। जिस जाति ने, व्यक्ति ने सत्संग का त्याग किया है, जिस गाँव में पिछले पच्चीस पचास वर्षों से सत्संग का अभाव हो उस गाँव के, जाति के लोगों के जीवन में अशांति और पिशाची वृत्ति बढ़ जाती है।

बिनु सत्संग न हरिकथा, ते बिनु मोह न भाग।
मोह गये बिनु रामपद होवहिं न दृढ़ अनुराग॥

अपने प्रवचन की शुरूआत में, मध्य में और अंत में सबके हित का चिंतन करके सबका आध्यात्मिक, सामाजिक और मानसिक विकास हो इसका ख्याल रखनेवाले पूज्य बापू इसी विषय में दूसरी रीति से, दूसरे लोगों के हित को ध्यान में रखते हुए बोले :

"राजनीति बुरी नहीं है। वह तो नीतियों का राजा है। लेकिन राजनीति में अगर सत्संग का संपूट नहीं होगा तो वह स्वार्थपरायणता, झगड़ों, शोषणपरायणता से अन्य को उद्वेग पहुँचानेवाली हो जाएगी। चाहे राजनीति हो या व्यवहारनीति हो या कुटुंबनीति हो या दूसरी कोई भी नीति हो लेकिन उसमें से सबको जोड़नेवाले तत्त्व - परमात्मा, सहानुभूति और सत्संग को निकाल दिया जाय तो व्यवहारनीति घर में झगड़े लाती है। कोई भी नीति हो, सब नीतियों में संपूट तो सत्संग का, सत्शास्त्र का, जोड़नेवाली वस्तु का होना चाहिए।

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं : 'हे अर्जुन ! तू अपने तन से जो कुछ करे उसमें धर्म का, सत्संग का संपूट जोड़ना। परमात्माशरन का संपूट जोड़ेगा तो तू शारीरिक कर्म में बंधेगा नहीं। तू मन से जो चिंतन करे उसमें हरि का रस जोड़ देना और बुद्धि से जो कुछ निश्चय करे वह निश्चय मनमुख नहीं होना चाहिए।

मनुष्य के जीवन में से अगर सत्संग को निकाल दिया जाय तो उसका जीवन पशु से भी खराब हो जाता है। जिस जाति ने, व्यक्ति ने सत्संग का त्याग किया है, जिस गाँव में पिछले पच्चीस पचास वर्षों से सत्संग का अभाव हो उस गाँव के, जाति के लोगों के जीवन में अशांति और पिशाची वृत्ति बढ़ जाती है।

''तस्मात्शास्त्रं प्रमाणम् ।''

मनमुख नहीं पर शास्त्र - अनुमोदित निश्चय। हमारे मन को जो पसंद आये वह तो युगों से करते आये हैं। अपने मन को जो अच्छा लगे वह मनपसंद कार्य तो कुत्ता भी ढूँढ लेता है। अपना मनपसंद काम तो पशु-पक्षी भी करते हैं। लेकिन ईश्वर को पसंद, शास्त्र संमत, सतुगुरु को पसंद और सत्यस्वरूप परब्रह्म परमात्मा को पसंद कार्य करे उसका जीवन धन्य हो जाता है।

अपने मन को जो अच्छा लगे वह मनपसंद कार्य तो कुत्ता भी ढूँढ लेता है। अपना मनपसंद काम तो पशु-पक्षी भी करते हैं। लेकिन ईश्वर को पसंद, शास्त्र संमत, सत्गुरु को पसंद और सत्यस्वरूप परब्रह्म परमात्मा को पसंद कार्य करे उसका जीवन धन्य हो जाता है।

सब धर्मों के सार तत्त्व की शिक्षा देते हुए जीवन्मुक्त संत शिरोमणी श्री बापू ने आगे कहा :

सिक्ख धर्म के आदि गुरु नानकजी ने कहा है :

''घर वीच आनन्द सुधा भरपूर. . .
मनमुख स्वाद न पाय।''

हृदय रूपी घर में ही अनन्त अनन्त आनन्द का भंडार भरपूर है। लेकिन मनमुख होने के कारण हम ले नहीं सकते। आनन्द की खोज में पूरा जीवन नष्ट कर देते हैं।

जो कुछ इकट्ठा किया है वह सब जीवन के अंत में छोड़कर मरना पड़ता है; जो कुछ सीखे हैं वह सब भूलना पड़ता है और 'मेरा. . . . मेरा. . .मेरा. . .' करके पूरी जिंदगी जिसको संभाला है वह सब मृत्यु का झटका लगते ही छूट जाता है। मौत आकर सब छुड़ा दे उसके पहले सब जिसका है उसका साक्षात्कार कर लो तो तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा।

जन्म का दु:ख, बुढ़ापे का दु:ख, व्याधि का दु:ख, माता के गर्भ में उलटे होकर लटकने का दु:ख आदि दु:ख अनेक जन्मों से यह जीव भोगता आया है। अभी अपने मन, कर्म और बुद्धि से जीवन की हर परिस्थिति में, हानि और लाभ में, सुख और दु:ख में अगर अपने आत्मा-परमात्मा तत्त्व का संपूट दे दिया जाय तो व्यक्ति संसार में भी सुख से रह सकता है, समाज को भी सुखमय बना सकता है, राजनीति को भी सुखद बना सकता है, व्यवहार को भी सुखद बना सकता है और अपने अंतरात्मा - परमात्मा का अनुभव करके अपने जीवन को परम सुख में जोड़ सकता है।

बिनु सत्संग न हरिकथा
ते बिनु मोह न भाग।

शास्त्र में भी आठ प्रकार के दानों का वर्णन आता है : भूमिदान, सुवर्णदान, गौरसदान, गौदान, कन्यादान, अन्नदान, विद्यादान और अभयदान।

पहले सात प्रकार के दान अच्छे हैं। गृहस्थी को अवश्य करने चाहिए। आठवें प्रकार का जो अभयदान है वह सत्संग से मिलता है। कन्यादान करने के बाद भी दामाद शराबी हो सकता है, जुआरी हो सकता है, लेकिन जो लोग समाज को सत्संग का दान दिलाते हैं, उसमें शराबी की शराब छूट जाती है, भंगेड़ी की भांग छूट जाती है, अभिमानी का अभिमान कम हो जाता है, चिंतावालों की चिंता कम हो जाती है, पापी के पाप कम हो जाते हैं और किये हुए पाप का क्लेश भी सत्संग से दूर हो जाता है। इससे जो लोग संत और समाज के बीच सत्संग के आयोजन के दैवी कार्य में साझेदार होते हैं वे दिव्य दान के पुण्यभागी होते हैं।

सत्संग के बिना मनुष्य भक्त बनेगा नहीं और भक्त के बिना परमात्मा कृपा किस पर करेंगे? अगर सत्संग नहीं होगा तो हृदय में भक्तिभाव आयेगा नहीं और हृदय में भक्तिभाव आयेगा नहीं तो परमात्मा की कृपा तो अविरत बह रही है फिर भी उसका अनुभव नहीं कर पायेंगे।

एक घड़ी आधी घड़ी
आधी में पुनि आध।
तुलसी संगत साध की
हरे कोटि अपराध॥

सत्संग की ऐसी महिमा है।

कुछ लोगों का मानना है कि परमात्मा अब हम पर दया करेंगे। अब हमें कथा, सत्कर्म एवं सत्संग में जाने की जरूरत नहीं है। परमात्मा ही कृपा करेंगे। परमात्मा

कृपा करते हों तो भले करें, इसमें हमारी मना नहीं है, लेकिन सत्संग के बिना मनुष्य भक्त बनेगा नहीं और भक्त के बिना परमात्मा कृपा किस पर करेंगे? अगर सत्संग नहीं होगा तो हृदय में भक्तिभाव आयेगा नहीं और हृदय में भक्तिभाव आयेगा नहीं तो परमात्मा की कृपा तो अविरत बह रही है फिर भी उसका अनुभव नहीं कर पायेंगे। बारिश खूब हो लेकिन किसान हल नहीं जोते, बीज नहीं बोए, खेत की निगरानी नहीं रखे तो अनाज नहीं पकेगा।

जिसके जीवन में सत्संग नहीं है वह सुख लेने के लिए हिंसा करेगा, विद्रोह करेगा, भोग का संग्रह करेगा और आखिर में अपने दिल को होली बनायेगा। अत: जिनको सत्संग मिलता है वे लोग भाग्यशाली होते है।

भक्ति शुरू करना हो तो भी सत्संग चाहिए। नीतिमत्ता का स्तर ऊँचा लाना हो तो भी सत्संग चाहिए। तन का स्वास्थ्य सुधारना हो तो भी सत्संग चाहिए और मन का स्वास्थ्य सुधारना हो तो भी सत्संग चाहिए। आदमी का शरीर बीमार हो तो वह करवटें बदलता रहता है। सुख से बैठ भी नहीं सकता और सो भी नहीं सकता। शरीर में पीड़ा हो या मन में रोग हो तो मन शांत नहीं रहता। 'यह चाहिए. . . वह चाहिए. . . यह करूँ. . .वह करूँ...' पूरा दिन और रात कुछ न कुछ करता ही रहेगा।

कुछ समय पहले भारत के एक सेठ अमेरिका घूमने गये। अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर की किसी होटेल में ठहरे थे। अमेरिका में भारत के राजदूत ने इनको फोन किया :

"सेठ ! रात्रि के समय आप अकेले कहीं इधर उधर घूमने मत जाना। खाना खाने के बाद भारत में जैसे घूमने की आदत होती है वैसे यहाँ फूटपाथ पर घूमने मत जाना।"

सेठ ने पूछा : "क्यो? किसलिए?"

राजदूत ने कहा : "यहाँ के लोग भोग से, डिस्को से, रोक-एन्ड-रोल से, व्हिस्की से, स्त्री-पुरुष के भोग से उब गये हैं, फिर भी सुख उनको मिला नहीं। अब किसी एकाकी आदमी को पकड़कर मारते हैं। वह बेचारा 'हाय-हाय' करता है तो वह दृश्य देखकर मजा लेते हैं।"

जिसके जीवन में सत्संग नहीं है वह सुख लेने के लिए हिंसा करेगा, विद्रोह करेगा, भोग का संग्रह करेगा और आखिर में अपने दिल को होली बनायेगा। अत: जिनको सत्संग मिलता है वे लोग भाग्यशाली हैं। वे लोग सचमुच पुण्यात्मा हैं जिनको सत्संग में रुचि है। तुलसीदासजी कहते हैं।

जिन हरिकथा सुनी नहिं काना।
श्रवण रंध्र अहि भवन समाना।
जे नहिं करहिं राम गुन गाना।
जीह सो दादूर जीह समाना॥

'जिसने अपने कान से हरिकथा नहीं सुनी उसके कान नहीं हैं लेकिन भोरिंग (साँप) के भवन (बिल) हैं। जिसने अपनी जिह्वा से भगवान के नाम का भजन नहीं किया उसकी जिह्वा नहीं लेकिन मेढ़क की जिह्वा है। उसकी जिह्वा व्यर्थ ही प्रलाप करके अपनी जिंदगी खो देनेवाली है।'

आप सब भाग्यशाली हैं कि आपको वर्षों से सत्संग करवाने और सुनने में पवित्र प्रीति है। कुछ पवित्र आत्माएँ तो सत्संग के वचन घर-घर पहुँचें ऐसी सेवा का अवसर भी ढूँढ लेते हैं। उन सब पुण्यात्माओं को परमात्मा अधिक उत्साह और आनन्द दें !

*

जप सबसे कठिन चीज है। मैं तो ज्ञान और ध्यान से भी जप को कठिन समझता हूँ। लोग ज्ञान की बातें तो रात-दिन कर सकते हैं, परंतु उन्हें जप करना कठिन है। सब प्रकार की बातें छोड़कर निरंतर एक ही मंत्र को जपते रहना साधारण बात नहीं है। जप में बड़ी विलक्षण शक्ति होती है। अधिक जप करने से शरीर के परमाणु मंत्राकार हो जाते हैं। **– श्री उडिया बाबा**

: विद्यार्थी शिविर :
अहमदाबाद दूरदर्शन पर प्रसारित कार्यक्रम

९ नवम्बर १९९२

दीपावली के पर्व पर अहमदाबाद के आश्रम में अक्तूबर १९९२ में आयोजित विद्यार्थी शिविर में पू. बापू का प्रवचन और विद्यार्थियों की मुलाकात का अहवाल ।

पूज्यश्री का प्रवचन

प्राचीन काल में भारत की शिक्षण-प्रणालि ऐसी थी कि विद्यार्थी पाँच साल की उम्र से गुरुकुल में प्रवेश पाता और पंद्रह साल तक उसको ऐसे दृढ़ संस्कार दिये जाते कि वह संयमी और सादा जीवन बिताकर इहलोक और परलोक में प्रभुत्व जमा दे ऐसी शक्तियों का विकास करता। देवता भी दैत्यों के साथ युद्ध में खट्वांग राजा की सहाय लेते थे, रघु राजा का साथ लेते थे। गुरुकुल में ऐसे विद्यार्थी तैयार होते थे।

अंग्रेज शासन आया और वे लोग हम सबको अपने नियंत्रण में लाने के लिये उपाय आजमाने लगे लेकिन वे सफल नहीं हो रहे थे। तब लार्ड मेकाले ने अंग्रेज सरकार को सलाह दी कि जब तक भारतीय संस्कृति के संस्कारों का उन्मूलन नहीं किया जाएगा और पाश्चात्य पद्धति का अभ्यास नहीं पढ़ायेंगे तब तक इन लोगों को हम स्थायी गुलाम नहीं बना सकेंगे। लार्ड मेकाले की सलाह से अंग्रेज सरकार ने हमारे भारतीय विद्यार्थियों और युवानों का 'ब्रेइन वोश' करने का काम शुरू किया। फलतः हमारी संस्कृति के गर्भ में जो संयम, सादगी और निष्ठा थी, ओज और तेज था वह सब अस्तव्यस्त हो गया।

लार्ड मेकाले ने अंग्रेज सरकार को सलाह दी कि जब तक भारतीय संस्कृति के संस्कारों का उन्मूलन नहीं किया जाएगा और पाश्चात्य पद्धति का अभ्यास नहीं पढ़ायेंगे तब तक इन लोगों को हम स्थायी गुलाम नहीं बना सकेंगे। लार्ड मेकाले की सलाह से अंग्रेज सरकार ने हमारे भारतीय विद्यार्थियों और युवानों का 'ब्रेइन वोश' करने का काम शुरू किया।

कुछ लोग कहते हैं कि 'यह विकास का युग है।' अच्छा भाई ! बाहरी साधनों में हम इसे विकास का युग मान लें; लेकिन यह युग विद्यार्थी के लिए तो बिल्कुल विनाश का युग है। आज के विद्यार्थी के साथ इस युग में जो अन्याय हो रहा है ऐसा कभी हुआ नहीं था। विद्यार्थी के खान-पान में पहले गाय का दूध मिलता था उसके बदले अभी कॉफी और चाय मिलती हैं। उससे यौवन की सुरक्षा नहीं लेकिन यौवन का नाश होता है। यादशक्ति बढ़ती नहीं है। विद्यार्थी के जीवन में साहस, बल और तेज का विकास करने की जो दीक्षा मिलती थी, जो ऋषियों की पद्धति थी वह सब अस्तव्यस्त हो गई। अभी तो...

I shout, you shout,
who will carry dirt out?
मैं भी रानी, तू भी रानी।
कौन भरेगा घर का पानी?

आवश्यकताएँ बढ़ गईं, दिखावा बढ़ गया और भीतर से जीवन खोखला हो गया। विद्यार्थी के जीवन में जो स्मरणशक्ति होनी चाहिए, तेजस्विता होनी चाहिए, संयम होना चाहिए वह सब भूल गये।

भाँग, शराब, चाय, बीड़ी और कैफी पदार्थों से स्मरणशक्ति क्षीण हो जाती है। गाय का दूध, गेहूँ, चावल, ताजा मक्खन, अखरोट एवं

तुलसी के पान इत्यादि से जीवन-शक्ति का विकास होता है और स्मरणशक्ति बढ़ती है।

प्रति दिन सुबह में आँखें बंद करके सूर्यनारायण के सामने खड़े रहो और नाभि से आधा सेन्टिमीटर ऊपर के भाग में भावना करो : 'सूर्य के नीलवर्ण का तेज मेरे केन्द्र में विकास के लिए आ रहा है।' ऐसी भावना करके श्वास भीतर खींचो। सूर्यनारायण का स्मरण करो, प्राणायाम करो। पाँच से सात मिनट तक सूर्यस्नान करो। आपका स्वास्थ्य तो बढ़ेगा ही, साथ ही साथ स्मृतिशक्ति भी गजब की बढ़ने लगेगी।

भाँग, शराब, चाय, बीड़ी और कैफी पदार्थों से स्मरणशक्ति क्षीण हो जाती है। गाय का दूध, गेहूँ, चावल, ताजा मक्खन, अखरोट एवं तुलसी के पान इत्यादि से जीवन-शक्ति का विकास होता है और स्मरणशक्ति बढ़ती है।

आज चारों ओर उपदेशों की भरमार है कि चोरी मत करो, शराब मत पियो, बुरी आदतों का त्याग करो, दिल लगाकर अभ्यास करो... लेकिन चोरी न करके ध्यान देकर पढ़ने की जो युक्ति है, जो पद्धति है वह हम सब भूलते गये हैं। फिर विद्यार्थी बेचारा क्या करे? कापी करके, कैसे भी करके परीक्षा में पास हो जाता है। लेकिन जीवन में जो ओज, बल और स्वावलंबीपना होना चाहिए वह प्राय: विद्यार्थियों के जीवन में नहीं दिखाई देता।

संयमी और साहसी जीवन जीने की हमारी भारतीय परंपरा है। पंद्रह साल की उम्र तक साहस और संयम के जितने भी संस्कार बालक में डाले जाएँगे उतना ही वह बड़ा होकर कालेज में भी प्रखर बुद्धिमान, स्वावलंबी और साहसी सिद्ध होगा।

कालेज और स्कूलों में नियम और कायदे तो हम बनाते हैं लेकिन विद्यार्थी की नींव का जीवन जैसा मजबूत बनना चाहिए उस पर सबको साथ मिलकर विचार, पुरुषार्थ करने की जरूरत है। आज का विद्यार्थी कल का नागरिक बनेगा। आज के बच्चे कल देश के नेता भी बन सकते हैं। इसलिए ऐसे बच्चों का जीवन मजबूत हो सके ऐसे उपाय करके हमें बच्चों की रीढ़ मजबूत बनाने की जरूरत है।

सुबह में जागो तब संकल्प करो कि : ''मैं भगवान का सनातन अंश हूँ। मुझमें परमात्मा का अनुपम तेज और बल है। भीख माँगकर जीना नहीं है, चोरी करके जीना नहीं है, विलासी जीवन जीना नहीं है। संयम और सदाचार से इस लोक और परलोक को जीतकर जीवनदाता का साक्षात्कार करना है।''

सुबह में जागो तब संकल्प करो कि : ''मैं भगवान का सनातन अंश हूँ। मुझमें परमात्मा का अनुपम तेज और बल है। भीख माँगकर जीना नहीं है, चोरी करके जीना नहीं है, विलासी जीवन जीना नहीं है। संयम और सदाचार से इस लोक और परलोक को जीतकर जीवनदाता का साक्षात्कार करना है।''

प्रतिदिन सूर्यनमस्कार किया करो। प्रतिदिन पाँच से दस प्राणायाम किया करो। प्राणायाम से आपके फेफड़ों की शक्ति का विकास होगा। जो लोग गहरी साँस लेते नहीं हैं उनके फेफड़ों के काफी छिद्र बंद रहते हैं। बंद छिद्रों में दमा और टी.बी. के जन्तु पनपते हैं। आगे चलकर जीवन नीरस हो जाता है। अत: अभी से प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिए। शरीर को तंदुरुस्त करने के लिए ध्यान, आसन और प्राणायाम हैं। आसन से रजोगुण कम होता है, सत्त्वगुण बढ़ता है, स्मृतिशक्ति बढ़ती है।

हाथ की पहली उँगली अंगूठे से दबाकर बाकी की तीन उँगलियाँ सीधी करके ध्यान में बैठने का प्रयास करो। आपके अंतरात्मदेव को, परमात्मा को, इष्ट को जिन्हें भी आप मानते हों उन्हें सच्चे हृदय से प्रार्थना करो :

असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मा अमृतं गमय।

नारायण... नारायण... नारायण...

*

शिविर में आये हुए विद्यार्थी क्या कहते हैं... ?

पूज्य श्री गुरुदेव के सान्निध्य में ध्यान योग तालीम शिविर में शरीक होनेवाले विद्यार्थियों की एक मुलाकात अहमदाबाद के दूरदर्शन ने ली। उसमें से जो नोट करने योग्य निष्कर्ष निकला वह इस प्रकार है :

एक विद्यार्थी पंचाल रविशंकर गणपतराम लुणावाड़ा के पछात विस्तार में से शिविर में भाग लेने आया है। उससे पूछा गया :

"शिविर में भाग लेने से पहले और बाद में तुम्हें क्या अनुभूति हुई ? क्या लाभ हुआ ?"

इस प्रश्न के उत्तर में उसने कहा :

"जब मैं पूज्य बापू के शिविर में नहीं आया था तब एक शरारती लड़का था। मैं स्कूल से भाग जाता था। पढ़ने में मेरा मन नहीं लगता था। दूसरी भी कह न पाउँ ऐसी कई गंदी आदतें थीं। लेकिन शिविर में भाग लेने के बाद बापू की छोटी किताबें 'यौवन सुरक्षा', 'पुरुषार्थ परम देव' आदि पढ़ने से एक साथ मेरी सब गंदी आदतें दूर हो गईं। मुझमें आमूल परिवर्तन हो गया और पढ़ने में मेरा चित्त लगने लगा। मेरी यादशक्ति का विकास हुआ और अभी मैं पढ़ने में अव्वल नंबर आता हूँ।"

सिद्धपुर का एक विद्यार्थी दिनेश भागचंदानी कहता है :

"पूज्य बापू के ध्यान योग शिविर में आने से पहले मैं बहुत ही आलसी था। देर से जागता, ऐसी वैसी गालियाँ बोलता, खाने-पीने में भी कोई ध्यान न देता, जो शुद्ध अशुद्ध मिलता वह खा लेता। मेरे शिक्षक भी मेरे पिताजी से कहते कि आपका यह शरारती लड़का कभी भी पढ़ नहीं सकेगा। लेकिन शिविर में भाग लेने सें मुझमें बदलाव आ गया। एकाग्रता, प्राणायाम और ध्यान मैं यहीं सीखा। में प्रतिदिन नियमित पूज्य बापू ने बताये हुए प्रयोग के मुताबिक ध्यान करता हूँ और अच्छे नंबरों से उत्तीर्ण होने लगा हूँ। अब तो भाई ! मैं सिविल फाइनल वर्ष में हूँ।"

इन्दौर का एक विद्यार्थी शेखर जगदीश गुरु ने दूरदर्शन की मुलाकात में कहा :

"इस शिविर से मुझे बहुत कुछ जानने को मिला। सुबह में जल्दी उठना, एकाग्रता, ध्यान, जीवनशक्ति और स्मरणशक्ति का विकास एवं परीक्षा में भी अच्छे मार्क्स लाने की युक्तियाँ यहीं सीखने को मिलीं। साथ ही साथ हम अच्छे आदमी बन सकें, भारत के श्रेष्ठ नागरिक बन सकें ऐसी शिक्षा भी यहीं मिलती है।"

भावनगर के एक विद्यार्थी चेतन सेठ ने कहा :

"पूज्य गुरुदेव के ध्यान योग शिविर में जाने से मेरी बुद्धि का विकास हुआ, एकाग्रता बढ़ी। इसी कारणों से परीक्षा में मैं अच्छे मार्क्स से उत्तीर्ण होने लगा हूँ। अभी तो मैं बी. ई. मिकेनिकल में हूँ। पिछले दो सेमीस्टर से मैं युनि. में फर्स्ट आता हूँ।"

केनेड़ा से शिविर में भाग लेने के लिए यहाँ आने के बाद महिला आश्रम में ही स्थायी होनेवाली एक किशोरी अमी नायक को जब पूछा गया तब उसने कहा :

"पूज्य बापू के आश्रम में आने से पहले मैं केनेड़ा में जैसे दूसरे लोग जीते हैं ऐसे ही जीती थी, जैसे कि स्कूल में जाना, पार्टियों में जाना, सिनेमा देखने और सखियों के साथ घुमने जाना आदि। भौतिक सुख सुविधाओं में ही डूबी हुई थी लेकिन मेरे पिताजी के साथ

"मैं एक शरारती लड़का था। मैं स्कूल से भाग जाता था। पढ़ने में मेरा मन नहीं लगता था। दूसरी भी कह न पाउँ ऐसी कई गंदी आदतें थीं। लेकिन शिविर में भाग लेने के बाद बापू की छोटी किताबें 'यौवन सुरक्षा', 'पुरुषार्थ परम देव' आदि पढ़ने से एक साथ मेरी सब गंदी आदतें दूर हो गईं। मुझमें आमूल परिवर्तन हो गया और पढ़ने में मेरा चित्त लगने लगा। मेरी यादशक्ति का विकास हुआ और अभी मैं पढ़ने में अव्वल नंबर आता हूँ।"

आश्रम में एक शिविर भरने के लिए आने के बाद पूज्य स्वामीजी के सान्निध्य में मुझे पता चला कि मेरी जीवन जीने की रीति बिल्कुल गलत थी। वहाँ तो सब कुछ कृत्रिम था। वहाँ बहुत सारी भोतिक सुविधाएँ होने के बाद भी वहाँ के लोगों को शांति नहीं है। यहाँ भारत में केनेड़ा की तुलना में सुविधाएँ कुछ भी नहीं हैं लेकिन आश्रम में अद्‌भुत दिव्य शांति है।''

*

संत श्री आसारामजी शिक्षक संघ

प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद गुरुदेव के असंख्य दैवी कार्य निरन्तर चल रहे हैं। आज के समय में विद्यार्थी सारे समाज एवं देश की नींव है। इस नींव को मजबूत करने के लिए पूज्यश्री दैवी कार्य चला रहे हैं। इसी सिलसिले में बार-बार विद्यार्थी तेजस्वी तालीम शिविरों का आयोजन किया जाता है।

परम पूज्य गुरुदेव एवं विद्यार्थी आलम के बीच सेतु हैं हमारे शिक्षक-अध्यापक भाई-बहन। यह सेतु अगर मजबूत बन जाय तो एक ऐतिहासिक दिव्य कार्य जलदी से साकार बन सकता है।

इस बात को ध्यान में रखते हुए 'संत श्री आसारामजी शिक्षक संघ' की स्थापना करने के लिए सोचा गया है। जो भाई-बहन शिक्षा के क्षेत्र से सम्बन्धित हों, शिक्षक, अध्यापक, छात्रालय-होस्टेल के गृहपति, स्कूल या संस्था के जनरल मेनेजमेन्ट आदि में सेवारत हों या निवृत्त बने हों ऐसे भाई-बहनों का एक संघ बनाना है। यह संघ सनातन धर्म के तथा परम पूज्य गुरुदेव के जीवन-विकास के सचोट प्रयोगों को विद्यार्थियों तक पहुँचाकर, उनके जीवन में कार्यान्वित करवाकर एक दैवी विद्यार्थी समाज का निर्माण करेगा जो आखिर में दिव्य मानव समाज और दिव्य देश में परिणत होगा।

आगे चलकर इस संघ के द्वारा जगह जगह स्कूल, छात्रालय या गुरुकुल आदि खोले जाएँगे तब उनकी सेवा या मानद सेवा का लाभ समाज को दिया जा सकेगा।

अतः आप शिक्षाक्षेत्र से सम्बन्धित सब भाई-बहन नीचे बताये गये फार्म के मुताबिक अपनी जानकारी १५ दिन के अन्दर निम्न पते पर भेज देवें ऐसी अपेक्षा के साथ . . .

हरि ॐ

पत्र भेजने का पता :
श्री पुराणीयाजी
'संत श्री आसारामजी शिक्षक संघ'
संत श्री आसारामजी आश्रम
साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५.

फार्म

१. नाम : ____________________

२. वर्तमान पता : ____________________

३. स्थायी पता : ____________________

४. जन्म दिनांक : ____________________

५. शैक्षणिक योग्यता : ____________________

६. पद (कौन-सी कक्षा में कौन-से विषय सिखाते हैं?) : ____________________

७. कौन-सी संस्था में नौकरी करते हैं? : ____________________

८. कितने वर्ष से नोकरी करते हैं? ____________________

९. मासिक वेतन : ____________________

१०. मंत्रदीक्षा (नामदान) कब ली? : ____________________

११. परिवार के सदस्यों के विषय में जानकारी : ____________________

१२. आपके पति / पत्नी / पुत्र का व्यवसाय : ____________________

दिनांक　　　　　　　　　　　　　　　　हस्ताक्षर

सनातन सत्य का अमृत

कुछ धर्म ऐसे होते हैं जिनको सामाजिक धर्म कहा जाता है। कुछ धर्म ऐसे होते हैं जिनको राजनैतिक धर्म कहा जाता है और कुछ धर्म ऐसे होते हैं जिनको सांप्रदायिक धर्म कहा जाता है। एक ऐसा धर्म है जिसने पूरी पृथ्वी पर और स्वर्ग में ही नहीं अपितु अतल, वितल, तलातल, रसातल, महातल, जनलोक, भुवर्लोक, तपलोक आदि अन्य लोकों में भी अपना साम्राज्य जमाया हुआ है। उसे कहते हैं सनातन धर्म।

सनातन धर्म में प्रतिष्ठित मनुष्य उस सनातन सत्य को प्राप्त करता है जो हर मनुष्य के हृदय में छुपा हुआ है। मनुष्य जितने अंश में सनातन शक्तियों का फायदा उठायेगा उतना ही उसका जीवन उन्नत होगा। फिर चाहे वह रामतीर्थ हों, विवेकानंद हों, कँवरराम हों, रमण महर्षि हों, भगवान राम हों या फिर चाहे कोई राजनैतिक जगत में सेवा करनेवाला भी हो। जितने अंश में वह सनातन धर्म से संबंध जोड़ेगा, उतने ही अंश में वह अपने कार्य में सफल होगा। सनातन धर्म हर मनुष्य के अंदर, हर जीव के अंदर और हर दिल के अंदर धड़कने ले रहा है।

जितना - जितना मनुष्य सनातन धर्म के करीब होता है उतना ही उतना उसके जीवन में स्नेह, आनंद, भ्रातृत्व, सहकार, उदारता का विकास होता है। जितना जितना मनुष्य संकीर्ण कल्पनाओं में उलझता रहता है उतना ही उतना वह खतरे में है। वह 'धर्म खतरे में है', 'वे खतरे में हैं, मैं खतरे में हूँ' ऐसी कल्पनाओं में फँस जाता है। लेकिन जिसके विचार महान हैं और जिसका संबंध उस महान से महान चैतन्य से है वही मनुष्य संकीर्णताओं से ऊपर उठकर शाश्वत सुख को पाता है।

भगवान श्रीरामचन्द्रजी के जीवन में सनातन धर्म प्रकट हुआ है। भगवान श्रीकृष्ण के जीवन में भी सनातन धर्म प्रकट हुआ है।

सनातन धर्म में प्रतिष्ठित मनुष्य उस सनातन सत्य को प्राप्त करता है जो हर मनुष्य के हृदय में छुपा हुआ है। मनुष्य जितने अंश में सनातन शक्तियों का फायदा उठायेगा उतना ही उसका जीवन उन्नत होगा।

हमारे और आपके जीवन की मुसीबतें क्या हैं? भगवान श्रीरामजी के जीवन में देखें तो कितनी मुसीबतें थीं? भगवान श्रीकृष्ण के जीवन में देखें तो कितनी आपत्तियाँ थीं? लेकिन वे सनातन सत्य में प्रतिष्ठित थे, इसलिये उनकी सारी मुसीबतें और आपत्तियाँ, विघ्न और बाधाएँ उनके अनुकूल हो जाती थीं और उनके जीवन को चमकाने और प्रसिद्धि देने के कारण बन गई थीं। श्रीकृष्ण के जीवन में देखें तो उनके आगमन का समाचार सुनने से उनके माता-पिता को जेल में जाना पड़ा। आपके आगमन से आपके माता-पिता जेल में तो नहीं गये? श्रीकृष्ण के जन्म को छः दिन हुए थे कि पूतना राक्षसी जहर पिलाने आयी। कभी धेनकासूर आया तो कभी बकासूर आया, कभी कालिय नाग से टक्कर लेनी पड़ी तो कभी क्रूर कंस मामा से मुलाकात करनी पड़ी। श्रीकृष्ण के जीवन में ऐसी कितनी - कितनी आपत्तियाँ आई फिर भी श्रीकृष्ण हमेशा मुस्कुराते ही रहे।

मुस्कुराकर गम का जहर जिनको पीना आ गया।
यह हकीकत है कि जहाँ में उनको जीना आ गया॥

आज का मनुष्य अपने जीवन में उस सनातन सत्य को और उस सनातन अमृत को पाने की आकांक्षा ही नहीं रखता। इसलिये वह सुविधाओं के बीच जन्मता है फिर भी रोता है। सुविधाओं के बीच पनपता है फिर भी रोता है और अंत में खत्म हो जाता है। हमारे बुज़ुर्गों के पास इतनी सुविधाएँ नहीं थी जितनी हमारे पास हैं। हमारे गुरुओं के पास ये साधन सामग्री और सुविधाएँ नहीं थीं। आज के युग में जितनी हैं उनकी अपेक्षा आगे की पीढ़ी में सुविधाएँ ज्यादा होगी लेकिन पहले के बुज़ुर्गों और अभी के लोग जितनी सहनशक्ति रख सकते हैं और जितना धैर्य रख सकते हैं उतना आगे की पीढ़ी में नहीं होगा। इसका कारण यह है कि यह पीढ़ी सनातन सत्य से दूर चली गई है। आज के बच्चों को जितनी सुविधाएँ हैं उतनी उनके माता-पिता को बचपन में नहीं थी। कोई अपवाद हो तो और बात है लेकिन सामान्य रूप से देखा जाए तो आज जितनी सुविधाएँ हैं, उतनी सुविधाएँ पहले

नहीं थी, फिर भी मनुष्य कुछ भीतर ठहरा हुआ था । आज इतना बाहर हो गया है कि महाराज ! सारी सुविधाएँ होने के बावजूद भी वह अशान्त है, खिन्न है, दुःखी है और आपस में लड़-झगड़कर अपने को परेशान कर रहा है । मनुष्य खुद अपने को सताये जा रहा है । क्यों? क्यों सताये जा रहा है ? क्योंकि सनातन अमृत से दूर चला जा रहा है ।

आज का मनुष्य अपने जीवन में उस सनातन सत्य को और उस सनातन अमृत को पाने की आकांक्षा ही नहीं रखता । इसलिये वह सुविधाओं के बीच जन्मता है फिर भी रोता है, सुविधाओं के बीच पनपता है फिर भी रोता है और अंत में खत्म हो जाता है ।

मानो न मानो यह हकीकत है ।
इश्क इन्सान की जरूरत है ॥

मनुष्य की सबसे बड़ी जरूरत यही है कि उसको सच्चा प्रेम, सच्चा आनंद और सच्ची मस्ती मिले । मनुष्य शराब कब पीता है? वह भोग-विलास में कब गिरता है? जब भीतर से ज्यादा दुःखी और बेचैन होता है । जितना विक्षिप्त होता है उतना ज्यादा गलती करता है, जितना मनुष्य भीतर से ज्यादा दुःखी होता है उतना वह बाहर से परेशान रहता है । जितना वह भीतर से ज्यादा दरिद्र होता है उतना वह बाह्य चीजों की गुलामी करता है।

जितना भीतर का धन ज्यादा विकसित होगा उतना उसके जीवन में बाहर की चीजों की बेपरवाही रहेगी । धन ज्यादा होने से मनुष्य बड़ा नहीं हो जाता और सौंदर्य, रूप-लावण्य आ जाने से मनुष्य सुंदर नहीं हो जाता लेकिन सुंदर से सुंदर जो चैतन्य आत्मा-परमात्मा है उसके करीब जितने अंश में मनुष्य जाता है, उतना ही वह सुंदर हो जाता है । अष्टावक्र का नाटा शरीर, काली काया और टेडी टाँगें । उनकी उम्र बारह वर्ष की थी और जनक जैसे बुद्धिमान, विशाल काय पुरुष, विशाल राज्य के स्वामी, उनके श्रीचरणों में प्रणाम करके कहते हैं : "भगवन् । संसार का दुःख कैसे मिटे?"

धन ज्यादा होने से मनुष्य बड़ा नहीं हो जाता और सौंदर्य, रूप-लावण्य आ जाने से मनुष्य सुंदर नहीं हो जाता लेकिन सुंदर से सुंदर जो चैतन्य आत्मा-परमात्मा है उसके करीब जितने अंश में मनुष्य जाता है, उतना ही वह सुंदर हो जाता है ।

संसार का मतलब क्या है? जो सरकता है वह संसार । जो सरकनेवाली चीजें हैं, जो सरकनेवाला देह है, जो सरकनेवाला मन है, जो सरकनेवाले संबंध हैं उनका आकर्षण कैसे मिटे? सबका उपयोग करना एक बात है और इनके आकर्षण में फँसकर मर जाना, जन्म-मरण के चक्कर में पड़ना दूसरी बात है । राजा जनक यह जानते थे । बुद्धिमान और पुण्यात्मा थे तभी तो अष्टावक्र मुनि जैसे गुरुओं के चरणों के शरण थे । अष्टावक्र बारह वर्ष के ऋषिकुमार हैं और जनक राजा हैं । समझते हैं कि यह राज्य तो पहले अपना नहीं था, बाद में अपना नहीं रहेगा । लेकिन वह मालिक तो पहले भी अपना था, अभी अपना है और इस देह के नष्ट हो जाने के बाद भी अपना ही रहेगा । इसलिये उसके साथ अपना नाता जुड़ जाय । जीवन की शाम होने से पहले जीवनदाता की मुलाकात हो जाय । आँखों की रोशनी कम हो जाय उसके पहले भीतर की आँख खुल जाय और कुटुंबी स्मशान में छोड़ने को तत्पर हो जाएँ उसके पहले हम अपने आपको इस मालिक से मिला दें । यह सनातन उत्कंठा है । जीव मात्र सुख चाहता है । बेटी पैदा होती है, बेटा पैदा होता है, वह पूछता है कि यह क्या है? वह क्या है? वह 'मैं कौन हूँ?' पूछे उसके पहले ही उसके ऊपर नाम रख देते हैं कि तेरा नाम यह है । तेरी यह जाति है, यह सब कल्पित संस्कार घुसेड़ देते हैं । जीव को अपनी ही जिज्ञासा का भाव होता है कि मैं कौन हूँ? जीव अगर 'मैं कौन हूँ' के उत्तर की गहराई में जाए तो वहाँ उसे सनातन चैतन्य तत्त्व से साक्षात्कार होता है । हर जीव के अंदर वह जीवनशक्ति है । अगर वह शक्ति दो-चार प्रतिशत भी विकसित हो तो मनुष्य समाज में आराम से जीता है । प्राणीमात्र के अंदर आत्म-चेतना है । चाहे फिर उसका नाम 'God' रख दो,

'भगवान' रख दो 'अल्लाह' रख दो, 'आत्मा' रख दो या 'कृष्ण' रख दो ।

जिसकी सत्ता से आपकी आँखें देखती हैं, जिसकी सत्ता से आपके कान सुनते हैं, जिसकी सत्ता से दिल धड़कता है, जिसकी सत्ता से आपकी बुद्धि निर्णय लेती है, जिसकी सत्ता से आपका मन सोचता है और जिसकी सत्ता से आपका शरीर बढ़ता है और मिट भी जाता है, फिर भी जो नहीं मिटता उसको सनातन सत्य कहा है । उस सनातन सत्य में आप जितने अंश में तदाकार होते हैं उतने ही अंश में आप उन्नत होते हैं ।

*

भारत ने हजारों ईसा पैदा किये हैं।

अमेरिका से आये पादरी रेवरेण्ड आवर ने पूणे और उसके आसपास कुछ अशिक्षितों को ईसाई बनाया । एक दिन एक पंडित ने उनसे प्रश्न किया :

"क्या आपने कभी हिन्दू धर्म का अध्ययन किया है?"

पादरी का उत्तर था : "नहीं ।"

तब पंडित ने आवर साहब से कहा : "हिन्दू धर्म की निन्दा और ईसाई धर्म की प्रशंसा करने से पहले आपको हिन्दू धर्म का अध्ययन तो कर ही लेना चाहिए ।"

यह बात रेवरेण्ड आवर को जँच गई । संस्कृत और मराठी सीखकर उन्होंने एकनाथ, ज्ञानेश्वर, तुकाराम आदि सन्तों के साहित्य का न केवल अध्ययन किया अपितु उनके जीवन-चरित्र और तत्त्वज्ञान का अंग्रेजी में अनुवाद भी प्रकाशित किया । यह सब करते हुए उनका मन बदल गया । फिर उन्होंने अमेरिका मिशन को जो पत्र लिखा वह प्रत्येक ईमानदार मिशनरी के लिए ध्यान देने योग्य है । उन्होंने लिखा :

"भारत ने आज तक सैंकड़ों और हजारों ईसा उत्पन्न किये हैं और भविष्य में भी यहाँ अनेक ईसा पैदा होंगे । इसलिए भारत में ईसाई मत के प्रचार का कोई प्रयोजन नहीं है । उसे सर्वथा बन्द कर देना चाहिए । भारत तो सत्य और धर्म का अगाध समुद्र है और प्रत्येक ईसाई को अपने मत का प्रचार न कर सत्य धर्म का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए । मैं मिशन से त्यागपत्र देता हूँ और अपनी आठ लाख की सम्पत्ति, जो अमेरिका में है, मैं पूणे के भारतीय इतिहास संशोधन मण्डल को अर्पित करता हूँ । इस धन से भारतीय 'वसन्त ग्रंथों' के अनुवाद छपते रहेंगे ।"

* सर्वव्यापी सच्चिदानन्दघन परमात्मा में स्थित सहकर ज्ञानचक्षु से इस प्रकार देखना चाहिए कि सब कुछ मेरे ही संकल्प के आधार पर स्थित है । मेरे ही संकल्प से सब की उत्पत्ति होती है और मेरे संकल्प का अभाव होते ही सब का विलय होता है । इस प्रकार समझकर फिर संकल्प छोड़ दो । संकल्प के त्याग के बाद जो शेष रहता है वह अमृत है, वही सत्य है, वही आनन्दघन है । इस प्रकार एकान्त में अचिन्त्य के चिन्तन का अभ्यास करना चाहिए ।

* व्यवहार में कभी प्रिय विषयों की प्राप्ति होती है कभी अप्रिय विषयों की । अनुकूल में प्रियता और प्रतिकूल में अप्रियता होती है । ज्ञाननिष्ठ साधक को उसमें प्रिय अथवा अप्रियबुद्धि न करके ब्रह्मभाव करना चाहिए । कहीं भी राग-द्वेष नहीं रखना चाहिए ।

'जो सुख लव सत्संग...'

सुंञा सखणा कोई नहीं, सब के भीतर लाल ।
मूरख ग्रंथि खोले नहीं, कर्मी भयो कंगाल ।।

सत्संग से हमें वह रास्ता मिलता है, जिससे हमारा तो उद्धार हो जाता है, हमारे इक्कीस कुल भी तर सकते हैं ।

बिनु सत्संग न हरिकथा ते बिन मोह न भाग ।
मोह गये बिनु राम पद, होवहिं न दृढ़ अनुराग ।।

सत्संग की जगह पर जाने से, एक एक कदम भरने से एक एक यज्ञ करने का फल मिलता है ।

देवर्षि नारद दासी के पुत्र थे... विद्याहीन, जातिहीन, धनहीन, कुलहीन और व्यवसायहीन दासी के पुत्र । चातुर्मास में वह दासी साधुओं की सेवा में लगायी गयी थी । साधारण दासी थी । वह साधुओं की सेवा में आती थी तो अपने छोटे बच्चे को भी साथ में ले आती थी ।

वह बच्चा आता तो कीर्तन करता, सत्संग सुनता । साधुओं के प्रति उसकी श्रद्धा हो गयी । उसको कीर्तन का, सत्संग का, ध्यान का रंग लग गया । उसको आनंद आने लगा । संतों ने नाम रख दिया हरिदास ।

सत्संग की जगह पर जाने से, एक एक कदम भरने से एक एक यज्ञ करने का फल मिलता है ।

वाग् गद्गदा द्रवते यस्य चित्तं....।

सत्संग, ध्यान और कीर्तन में उसका चित्त द्रवित होने लगा । जब साधु जा रहे थे तो वह बोला कि : "गुरुजी ! मुझे साथ ले चलो ।"

संत : "बेटा ! अभी तुझे हम साथ नहीं ले जा सकते । जन्मों-जन्मों का साथी जो हृदय में बैठा है, उसकी भक्ति कर, प्रार्थना कर ।"

संतों ने ध्यान-भजन का तरीका सिखा दिया और वही हरिदास आगे चलकर देवर्षि नारद बना । जातिहीन, विद्याहीन, कुलहीन, और धनहीन बालक था, वह देवर्षि नारद बन गया । नारदजी को तो देवता भी मानते हैं । मनुष्य भी उनकी बात मानते हैं और राक्षस भी उनकी बात मानते हैं ।

एक बार भगवान श्रीकृष्णचन्द्र की सभा में नारदजी आकाश मार्ग से आये । श्रीकृष्ण उठकर खड़े हो गये । सभा के लोग भी खड़े हुए । भगवान श्रीकृष्ण ने अर्घ्यपाद्य से नारदजी का पूजन किया ।

एक बार भगवान की सभा में इस बात को लेकर दो पक्ष हो गये कि पहले युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में जायें कि पहले जरासंध को ठीक करें । सात्यकि, बलराम, कृतवर्मा और उद्धव में मतभेद हो गया । बलराम और सात्यकि का कहना था कि पहले जरासंध का नाश करें, जबकि उद्धव का कहना था कि शत्रु के नाश में जल्दबाजी न करो । पहले सत्कर्म करो, फिर अर्जुन और भीम आदि के द्वारा जरासंध को मरवाना चाहिए । इस प्रकार दो पक्ष हो गये ।

भगवान श्रीकृष्ण ने देखा कि मेरे घर में ही दो पार्टियाँ पड़ गयीं । अब क्या करें? दूसरे दिन नारदजी सुबह में ही भगवान के कक्ष में प्रकट हुए । उन्होंने कहा :

"भगवन् ! आप एक मीठी निगाह से लोगों की चिन्ता हर लेते हैं । आपके नाम का जयघोष करने से लोग निश्चिंत हो जाते हैं । आप किस चिंता में पड़े हैं?"

भगवान : "नारदजी ! जरासंध ने बंदी राजाओं को सताया है । उन राजाओं का दूत आकर कह गया था उनकी मुक्ति के लिए और बाद में आप भी आये युधिष्ठिर के यज्ञ का न्यौता लेकर । तो हमारी सभा में दो पक्ष हो गये । हमारे घर में ही दो पार्टी हो गई ।"

नारदजी : "भगवन् ! अभी आप कुछ कहो मत । भीतर से उनको जोड़ो मगर बाहर से उन्हें कुछ कहो नहीं । बाहर से अगर आप किसीका भी पक्ष लेंगे तो दूसरों का मन दुभेगा । आपके राजकाज में, आपके कुटुम्ब में दलबन्दी घुस जायेगी । भीतर से आप दोनों को मिलाओ और बाहर से मौन रहो ।"

कहाँ तो दासीपुत्र ! जातिहीन, विद्याहीन, कुलहीन और कहाँ भगवान को सलाह देने की योग्यता !

ऐसे महान बनने के पीछे नारदजी के जीवन के तीन सोपान थे :

एक सोपान था - सत्संग, साधुसमागम ।

दूसरा सोपान था - उत्साह ।

तीसरा सोपान था - श्रद्धा ।

सत्संग, उत्साह और श्रद्धा अगर छोटे से छोटे आदमी में भी हो तो वह बड़े से बड़ा कार्य कर सकता है । यहाँ तक कि भगवान भी उसे मान देते हैं ।

''भगवन् ! आप एक मीठी निगाह से लोगों की चिन्ता हर लेते हैं। आपके नाम का जयघोष करने से लोग निश्चिंत हो जाते हैं । आप किस चिंता में पड़े हैं ?''

वे लोग धनभागी हैं, जिनको सत्संग मिलता है। वे लोग विशेष धनभागी हैं जो सत्संग दूसरों को दिलाने की सेवा करके संत और समाज के बीच की कड़ी बनने का अवसर खोज लेते हैं, पा लेते हैं और अपना जीवन धन्य कर लेते हैं।

एक पृथ्वी के देव होते हैं। दूसरे स्वर्ग के देव होते हैं । स्वर्ग के देव तो अपना पुण्य खर्च करके मजा लेते हैं । पृथ्वी के दैव हैं 'इमानदार शिष्य' । गुरु और भगवान के दैवी कार्यों में अपने तन, मन और जीवन को लगानेवाला शिष्य, पृथ्वी का देव माना गया है । स्वर्ग का देव तो अपना पुण्यनाश करके मजा लेता है मगर यह पृथ्वी का देव अपना पापनाश करके भगवान का रस पाता है ।

जो भगवद्भक्ति करते हैं, कराते हैं उसमें जो सहायक होते हैं, सहभागी हो जाते हैं, हरिरस बाँटने में जो सहायक होते हैं वे बड़े पुण्यशील हैं ।

मानो किसी आदमी ने सदाव्रत खोला है । सदाव्रत माने अन्नक्षेत्र । उसमें कोई भी आये, साधुसंत, गरीब, भूखा, अतिथि, वह टुकड़ा खाये । उसे सदाव्रत कहते हैं । कोई आदमी सदाव्रत खोलता है । अगर दूसरा आदमी उसमें दो मन गेहूँ भेजेगा तो उसे पाप होगा या पुण्य? दो मन चावल भेजेगा तो क्या होगा? दाल भेजेगा तो? पुण्य ही होगा। अरे ! दाल-चावल को छोड़ो, एक सेर इमली, नमक भेजेगा तो भी पुण्य ही होगा । क्योंकि सदाव्रत में भेजा है, जो भी आयेगा वह खायेगा । सदाव्रत की रोटी खानेवाले आदमी की चार घंटे की भूख मिटती है, तभी भी नमक, इमली चावल या घी भेजनेवाले को पुण्य होता है ।

शरीर की भूख और प्यास रोटी-पानी की है । मगर जीवात्मा की भूख रोटी की नहीं है । परमात्मा-प्राप्ति की भूख नहीं मिटी तब तक जीवात्मा चौरासी लाख जन्मों में भटकता रहेगा । जो लोग जीवात्मा की भूख मिटाने के सदाव्रत में सहभागी हो जाते हैं, वे पृथ्वी पर के देव माने जाते हैं । उनका तो उद्धार होता है, उनके कुल का भी उद्धार होता है ।

कुलं पवित्रं जननी कृतार्था
वसुंधरा पुण्यवती च येन ।

जो लोग सत्संग सुनते हैं अथवा दूसरों को सुनाने में सहभागी होते हैं, भगवान और संतों के दैवी कार्य में, समाज के वास्तविक उत्थान के कार्य में जो लोग सहभागी होते हैं, उनको पृथ्वी पर के देव कहा गया है।

चोले जिन्हांदे रतड़े संग जिन्हांदे पाख ।
धूली उन्हांदी जे मिले नानक दी अरदास ।।

ऐसे पुरुषों की चरणरज मिले, ऐसी नानकजी अरदास करते हैं, इच्छा करते हैं ।

कबीरजी कहते हैं :

कथा कीर्तन रात दिन जिनका उद्यम एह ।
कह कबीर वा संत की हम चरनन की खेह ।।

जिनको कथा, कीर्तन और सत्संग में रुचि है ऐसे संतहृदयी लोगों के चरणों की हम खेह (धूल) हो जायें ।

शास्त्र कहता है : '**सः तृप्तो भवति** । वह तृप्त होता है, भीतर के रस से, सुख से ।

सः तृप्तो भवति सः अमृतो भवति ।
सः तरति लोकान् तारयति ।।

वह तो तरता है, दूसरों को भी तारता है ।

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरिये तुला इक अंग ।
तुल न ताहि सकल मिली जो सुख लव सत्संग ।।

*

श्रद्धा और संकल्प

– श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार

जो पुरुष वास्तव में परम श्रद्धालु है और जिसे संत महात्मा की बात पर अचल विश्वास है, उसका तो यह निश्चय है कि महात्मा यदि असम्भव बात भी कह दें तो वह सम्भव हो सकती है और उनके कहने से सम्भव बात भी असम्भव हो सकती है। इसी प्रकार उच्च कोटि के पुरुषों का संकल्प भी ऐसा ही होता है। उच्च कोटि के पुरुष न तो भविष्य की बात ही निश्चित रूप से कहते हैं और न निश्चित रूप से भविष्य का संकल्प ही करते हैं; जो कुछ हो रहा है, वे उसीमें मस्त रहते हैं। एक क्षण के बाद क्या होने वाला है, क्या होगा, इसकी ये न तो जानने की इच्छा ही करते हैं, न जानने की आवश्यकता ही समझते हैं और न इस बात के जानने को अच्छा ही समझते हैं। ऐसे पुरुष ही सत्य-संकल्प होते हैं।

जो लोग वृथा संकल्प करते रहते हैं, उनके संकल्प सत् नहीं होते।

संकल्प के विषय में एक रहस्य की बात यह है कि जो मनुष्य अपना कल्याण चाहते हैं, उनको भविष्य का कोई भी संकल्प नहीं करना चाहिये। भावी संकल्प भावी जन्म का कारण होता है। आपके मन में यह संकल्प हुआ कि मैं कल कलकत्ते जाऊँगा और किसी कारण से आज आपकी मृत्यु हो गयी तो फिर आपको उस संकल्प के कारण दूसरा जन्म लेकर कलकत्ते जाना पड़ेगा। इसलिये कल्याणकामी मनुष्य को यही समझना चाहिये कि मुझको कुछ भी नहीं करना है। जो कुछ हो रहा है, उसे देखते रहना चाहिये। एक क्षण के बाद मुझे यह काम करना है, यह संकल्प भी नहीं करना चाहिये।

जो मनुष्य अपना कल्याण चाहते हैं, उनको भविष्य का कोई भी संकल्प नहीं करना चाहिये। भावी संकल्प भावी जन्म का कारण होता है।

यदि कहा जाय कि ऐसा संकल्प न करने से कार्य कैसे होगा? भोजन करना है, नीचे से ऊपर जाना है, [illegible] नीचे उतरना है, इसके लिये तो पहले मन में संकल्प होगा, तभी उसके अनुसार क्रिया होगी। यह कहना ठीक है, पर इस विषय में विकल्प सहित ही संकल्प करना चाहिये। विकल्प सहित का अभिप्राय यह है कि जैसे ऊपर जाने की आवश्यकता है, यह ठीक है, पर ऊपर जाना बन जाय तो बन जाय, न बने तो न बने। भोजन करने का समय हो गया तो भोजन के लिए वहाँ चल दिये। भोजन मिल गया तो खा लिया, नहीं तो नहीं। कोई संकल्प नहीं। एक लक्ष्य को रखकर चल रहा है, साथ में उस संकल्प के साथ यह विकल्प है - 'हो जाय तो अच्छी बात है, न हो तो भी अच्छी बात है। अमुक काम करने का विचार है, कोई निश्चय नहीं। जो कुछ बन जाय, वही सत्य है।'

कोई पूछे कि 'अब आपको क्या करना है?' तो भीतर से यह आवाज आनी चाहिये कि कुछ भी करना नहीं है। जैसे महात्मा कृतकृत्य पुरुष को तो कुछ करना शेष रहता ही नहीं, वैसे ही साधक पुरुष को भी अपने हृदय में यह भाव रखना चाहिये कि मुझे कुछ करना नहीं है। वर्तमान में जो भजन-ध्यान हो रहा है, वह वर्तमान क्रिया ही हो रही है। भविष्य के लिये नहीं। वर्तमान क्रिया में जो साधन चल रहा है, उसके विषय में उसकी यही समझ है कि ऐसी अवस्था में प्राण चले जायँ तो कोई हर्ज नहीं है। भविष्य में तो मेरे लिये कुछ करना शेष नहीं है। जो कुछ हो रहा है, परमात्मा की मर्जी से हो रहा है। जो भी हो रहा है, सब ठीक हो रहा है। मेरे द्वारा जो कुछ हो रहा है, वह भी परमात्मा की मर्जी से हो रहा है। परेच्छा, अनिच्छा से जो हो रहा है, वह भी परमात्मा की मर्जी से हो रहा है। मुझे तो कुछ करना है ही नहीं। मेरे द्वारा भी जो कुछ भी परमात्मा करवा रहे हैं, वह मेरे लिये मङ्गल की बात है। उनकी जैसी इच्छा हो करवायें। मुझे तो कुछ भी करना है नहीं।

मन में ऐसा निश्चय रखे कि 'जो कुछ हो रहा है, सब स्वाभाविक ही हो रहा है। परमात्मा करवा रहे हैं, उनकी मुझ पर दया है।' इस प्रकार से निश्चिन्त होकर रहो। जैसे

कोई मनुष्य टिकट खरीदकर गठरी-मोटरी लिये ट्रेन पर बैठने के लिये तैयार है और ट्रेन की बाट देख रहा है, इस प्रकार से मनुष्य को समस्त कार्यों से निपटकर मृत्यु की प्रतीक्षा करते रहना चाहिये। यह बहुत ही उत्तम भाव है। महात्मा पुरुष का जो स्वाभाविक भाव है, साधक के लिये वही साधन है।

अतः मनुष्यमात्र का कर्त्तव्य है कि परमात्मा को आत्मसमर्पण करके यह निश्चय रखे कि परमात्मा मेरे द्वारा जो करवा रहे हैं सो ठीक करवा रहे हैं; जो कुछ अनिच्छा-परेच्छा से हो रहा है, ठीक हो रहा है। ऐसा भाव रखे कि भगवान् का जो विधान है, वह वास्तव में न्याय्य है और मेरे लिये मङ्गलकारक है। साधक का यह भाव उच्च कोटि का है।

मनुष्यमात्र का कर्त्तव्य है कि परमात्मा को आत्मसमर्पण करके यह निश्चय रखे कि परमात्मा मेरे द्वारा जो करवा रहे हैं सो ठीक करवा रहे हैं; जो कुछ अनिच्छा-परेच्छा से हो रहा है, ठीक हो रहा है।

अनिच्छा से जैसे किसीका लड़का मर गया, शरीर में रोग हो गया, घर में आग लग गयी तो बहुत आनन्द की बात है। इसके विपरीत, लड़का पैदा हो गया, घर में लाख रूपये आ गये या शरीर स्वस्थ हो गया - तब भी आनन्द की बात है। चाहे कोई मान करे या अपमान करे, निन्दा करे या स्तुति करे, दोनों में तनिक भी अन्तर नहीं। जैसा मान वैसा ही अपमान। जैसा मित्र वैसा ही शत्रु और जैसा सुख वैसा ही दुःख। इस प्रकार जिनका सर्वत्र समभाव है, वे ही पुरुष श्रेष्ठ हैं। ऐसे महात्मा के जो लक्षण शास्त्रों में बताये गये हैं, उनको लक्ष्य बनाकर जो अभ्यास करता है, वह शीघ्र महात्मा बन जाता है। यही बड़ी मूल्यवान वस्तु है। महात्मा में तो यह स्वाभाविक है। साधक के लिये आदर्श साधन है। जो मनुष्य साधन मानकर इस प्रकार अभ्यास करता है, वह आगे चलकर शीघ्र ही महात्मा बन जाता है। किसी आदमी ने गाली दी तो आनन्द, प्रशंसा की तो आनन्द; उनमें किंचित् भी भेद न समझे। यों समझे कि निन्दा-स्तुति दोनों ही वाणी का विषय है - आकाश का गुण है, शब्द मात्र है। इसमें भला और बुरा क्या है? निन्दा और स्तुति होती है नाम की, देह की। मैं इस नाम से रहित हूँ। मान अपमान होता है रूप का, देह का। में इस रूप या देह से सर्वथा पृथक् हूँ। न मेरा मान है न मेरा अपमान है; न मेरी निन्दा न मेरी स्तुति। इनसे मेरा कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। इस प्रकार का ज्ञान आत्मा का कल्याण करनेवाला है।

*

सत्संग सरिता

इस क्षणभंगुर शरीर में रखा क्या है? कुछ सीधी हड्डियाँ। माँस के लोचे रगों से बँधे हुए और वे रगें भी पोली। उनमें वात, पित्त और कफ का प्रकोप। इन रगों और माँस से बँधी हड्डियाँ, इनके ऊपर चमड़ी का आवरण। बाकी की खाली जगह में मल, मूत्र और खून। ऐसे अशुद्ध शरीर में से एक हड्डी बाहर निकल जाय तो उसे छूने पर भी हाथ धोने पड़ते हैं। ऐसे शरीर में आसक्ति करके जो लोग जी रहे हैं, उनका मन पीपल के पान जैसा होता है।

साधारण लोग विषयी हैं, अति चंचल हैं, छोटी-छोटी बातों में रूठ जाते हैं। **'क्षणे रुष्टाः क्षणे तुष्टाः रुष्टा तुष्टा क्षणे क्षणे...।'** जैसे, कुत्ते को जलेबी दिखाई तो पूँछ दबा देगा। बच्चे को चोकलेट दे दो तो राजी और छिन लो तो नाराज। ऐसे ही वे आदमी जरा-सा अपना मनमाना न हुआ तो फिर तुलना करेंगे, खोपड़ी खपायेंगे। ऐसे लोगों को थोड़ा मान देने वाले पाँच-पचीस लोग मिलते हैं तो वे लोग समझ लेते हैं कि हम कुछ हैं। लेकिन जब अपमान होता है तब पता चलता है कि तुम क्या हो।

शुकदेवजी महाराज जब रास्ते से गुजर रहे थे तब उन्हें पागल समझकर लोगों ने मजाक उड़ाया, कंकड़ मारे परंतु शुकदेवजी के चित्त में क्षोभ नहीं हुआ।

सेठ रतनराय का नवलखा हीरे का हार खो गया। दासी ने कहा :

"हार खो गया।"

सेठ : "अहो ! कल्याणम्। जो हो गया, कल्याण।" हार मिल गया और दासी ने बताया उस समय भी कहा : "अहो ! कल्याणम्।"

ऐसे बुद्धिमान सत्संगी हर्ष-शोक या अभिमान नहीं करते हैं। लेकिन जो छोटे-छोटे लोगों के बीच बड़े हो जाते हैं, पीपल के पत्ते जैसा जिनका मन है, उनको कोई आदमी थोड़ा-सा भी विशेष कह देता है, 'भाई साहब.... बड़े भैया......' आदि करता है तो दूसरों के थोपे हुए बड़प्पन का भूत उनमें गहरा घुस जाता है। फिर कहीं थोड़ा-सा अपमान होता है तो ऊपर-नीचे हो जाते हैं। यह बड़प्पन की निशानी नहीं है। बड़प्पन की निशानी तो यह है कि कितना भी घोर अपमान हो, आपके चित्त पर उसकी चोट न लगे। कितना भी मान हो, आपके चित्त में गर्व न आये, क्योंकि मान और अपमान का आपके साथ संबंध नहीं है, आपका तो परमात्मा के साथ संबंध है।

मान पुड़ी है जहर की खाय सो मर जाय।
चाह उसीकी राखता सो भी अति दुःख पाय ॥

जो मान के लिए सेवा करते हैं, दान करते हैं वे अपने दान-सेवा के पुण्य को मान में ही खत्म कर देते हैं। जो अपने दान, सेवा को गोप्य रखते हैं, मान लेने के मौके पर छिपे रहते हैं और सेवा करने के मौके पर आगे आ जाते हैं उनका अंतःकरण वृक्ष जैसा मजबूत हो जाता है। सेवा तो कोई करे और यश कोई और ले ! जो यश के पूजारी हैं, मान के पूजारी हैं, भोग के पूजारी हैं उनका मन बड़ा पराधीन होता है। जैसे कि जर्मन टॉय। चावी भर दो और वह घूमता रहेगा।

कोई थोड़ा-सा अपमान कर दे तो खोपड़ी घूमती रहे, थोड़ा-सा कोई मान दे तो पूंछ हिलती रहे। चार लोगों ने मान दे दिया, अखबार में कोई छोटा-मोटा नाम आ गया तो अखबार संभालते रहेंगे, लेकर घूमते रहेंगे, औरों को दिखाते रहेंगे। अरे ! तू अखबार के कागज को साथ में लेकर घूमता है? किसी विशेष व्यक्ति के साथ छपे अपने फोटो को साथ में लेकर घूमता है तो अंदर जो तेरा विश्वेश्वर साथ में बैठा है उसका अनादर कर रहा है। तू उसका आदर कर जो जगन्नियंता परमात्मा तेरे साथ सदा निभाये बैठा है।

स्वामी रामतीर्थ को यशोगान करनेवाले प्रमाणपत्रों के बंडल मिले थे। रामतीर्थ ने स्टीमर चलते ही वे

बड़प्पन की निशानी तो यह है कि कितना भी घोर अपमान हो, आपके चित्त पर उसकी चोट न लगे। कितना भी मान हो, आपके चित्त में गर्व न आये, क्योंकि मान और अपमान का आपके साथ संबंध नहीं है। आपका तो परमात्मा के साथ संबंध है।

प्रमाणपत्र और वाहवाही का ढेर समुद्र में दे मारा । लोगों ने पूछा कि यह क्या करते हो? तो वे अपने आपसे बोले कि : **''राम ! तुझसे सारा जगत प्रमाणित होता है । तू किसके प्रमाणपत्र लेकर बड़ा बनेगा?''**

जरा-सा M.B.B.S, M.D. या LL.B. का सर्टिफिकेट मिल जाता है तो घर में ऐसी जगह उसे लगाते हैं कि कोई आये तो देखे कि यह मैं हूँ । एक कागज के टूकड़े पर किसी अधिकारी ने सिक्का जमा दिया, हस्ताक्षर कर दिये, वहाँ अपने को बाँध रहे हैं कि देखो, मैं इतना बड़ा हूँ ।

जो मान के लिए सेवा करते हैं, दान करते हैं वे अपने दान, सेवा के पुण्य को मान में ही खत्म कर देते हैं । जो अपने दान, सेवा को गोप्य रखते हैं, मान लेने के मौके पर छिपे रहते हैं और सेवा करने के मौके पर आगे आ जाते हैं उनका अंत:करण वृक्ष जैसा मजबूत हो जाता है ।

इन पदवियों से तेरा गुजारा होगा? तुझे शांति मिलेगी? तेरा गुजारा तो तेरे राम से होता है । राम के साथ तेरा संबंध कट जाय फिर कोई पदवी काम नहीं आती । इसलिए भैया ! सावधान हो जाओ । भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं : **'सर्वतो मनसो असंगो...'** पदवियों के साथ संबंध मत जोड़ो, मकान के साथ संबंध मत जोड़ो । अरे ! लोग तो जूतों के साथ ऐसा संबंध जोड़ते हैं कि मंदिर में जाते हैं तब भी जूतों का चिन्तन करते हैं । भगवान के सामने निहारते हैं और स्तुति करते हैं कि :

त्वमेव माता च पिता त्वमेव...

इतने में फिर 'कोई जूता न ले जाय' ऐसी चिन्ता से जूतों की ओर देखते जाते हैं और कहते जाते हैं :

त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव...।

'त्वमेव माता च पिता त्वमेव' कहते हुए भगवान को निहारते हैं और 'त्वमेव बंधुश्च सखा त्वमेव' कहते हुए जूते को निहारते हैं ।

फिर भगवान की ओर निहारकर कहते हैं :

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव...

फिर पास में अपने बच्चे और पत्नी खड़ी है उधर देखता जाता है और स्तुति का पद पूरा करता जाता है :

त्वमेव सर्वं मम देव देव...।

आज कल ऐसा दर्शन होता है । दर्शन करते समय आदमी देख लेता है कि बच्चे हैं कि नहीं, पत्नी है कि नहीं, वे दर्शन कर रहे हैं कि नहीं, प्रसाद का लड्डू उन्होंने लिया कि नहीं । ''महाराज ! यह मेरा लड़का है, चौथी क्लास में पढ़ता है ।'' अरे ! तुम पत्नी, पुत्र, परिवार का परिचय न दो । अपना परिचय लेकर जाओ । अपना थोपा हुआ, माना हुआ परिचय देने मंदिर में थोड़े ही आये हो?

भगवान श्रीकृष्ण इसकी मना कर रहे हैं ।

सर्वतो मनसो असंगो आदौ संगं च साधुषु ।

तुलसीदासजी कहते हैं :

एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध ।
तुलसी संगत साध की, हरे कोटि अपराध ।।

यही बात कबीरजी कहते हैं :

सतसंग की आधी घड़ी, सुमिरन वर्ष पचास ।
वर्षा बरसे एक घड़ी, अरट फिरे बारह मास ।।
सुख देवे दु:ख को हरे, करे पाप का अंत ।
कह कबीर वे कब मिले, परम सनेही संत ।।

जिनका परम से स्नेह है, परम तत्त्व परमात्मा में जिनकी स्थिति है, प्रीति है, ऐसे परम स्नेही संत हमें कब मिलेंगे?

जब सूर्य या चन्द्रग्रहण हो तो ग्रहण आरंभ होने से पहले ही स्नान कर लें और ग्रहण-मोक्ष होने तक बराबर इष्ट मंत्र का जप करें । इस समय एकाग्र चित्त से स्थिरतापूर्वक जप किया जाय तो चौबीस लक्ष गायत्री के पुरश्चरण के समान फल होता है । ग्रहण-मोक्ष होने पर गंगा-स्नान कर सकें तो ठीक नहीं तो गंगाजी का स्मरण करके स्नान करें । – श्री उड़िया बाबा

दुल्हा कुँए में गिरा

कोई अच्छे घराने का सुखी कुटुंब था। उसने अपना छोटा-सा लड़का गुरुजी को अर्पण किया :

गुरु महाराज ! इसको साधु बनाकर इसका जीवन धन्य कीजिए।''

गुरुजी एकांत जंगल में रहते थे। लड़के को वहाँ ले गये। सात आठ साल का लड़का, अठारह साल का हो गया तब तक उसने ध्यान-भजन, जप-तप, योगादि किया। गुरु ने कहा :

''चार बातें जिसमें हो वह कैसा भी आदमी हो, महान बन सकता है। एक तो भगवान का ध्यान, दूसरा शास्त्र का ज्ञान, तीसरा गुरु का संग और चौथा देशाटन। तेरे तीन काम तो हो गये। चौथा देशाटन बाकी रह गया है। अभी कुंभ का मेला हो रहा है। जाओ यात्रा करने को। रास्ते में भूख लगे तो गाँव से भिक्षा ले लेना, गाँव के बाहर कोई मंदिर हो वहाँ सो जाना, फिर सुबह चल देना। दोपहर को थोड़ा आराम कर लेना। कुछ दिखे तो जिज्ञासा करके पूछताछ करके ज्ञान-संपादन कर लेना।

चार बातें जिसमें हो वह कैसा भी आदमी हो, महान बन सकता है। एक तो भगवान का ध्यान, दूसरा शास्त्र का ज्ञान, तीसरा गुरु का संग और चौथा देशाटन।

जैसा गुरु ने बताया वैसे ही वह यात्रा करते हुए निकल पड़ा। सात साल का था तब से जंगल में ही रहा था। उसे पता ही नहीं कि शादी-विवाह, बारात या संसार का व्यवहार क्या होता है।

एक बार वह किसी गाँव से गुजर रहा था तो देखा कि बैंड-बाजे बज रहे हैं, लोगों की भीड़ जा रही है। कोई लड़का सजधज कर घोड़े पर सवार है। उसने तो ऐसा कभी देखा नहीं था। लोगों से पूछा : ''यह क्या है?''

लोग बोले : ''बारात है।''

''बारात क्या होती है?''

लोगों ने बताया : ''घोड़े पर जो बैठा है वह छोरा दुल्हा है। किसी कन्या से विवाह होगा, शादी होगी, उसे दुल्हन बनाकर अपने घर लायेगा।''

उसने पूछा: ''शादी क्या होती है?''

लोगों ने कहा : ''शादी होगी माने दुल्हा-दुल्हन का हस्तमेलाप होगा।'' किसी दूसरे नटखट युवान छोरे ने बताया कि फिर दोनों साथ में रहेंगे साथ में सोयेंगे। और भी उसने सुनाया। ब्रह्मचारी ने चलते चलते सब सुन लिया।

दोपहर हुई। किसी गाँव से भिक्षा माँगी। गाँव के बाहर कोई मंदिर था, पानी की एक बावड़ी थी, वटवृक्ष था, चबूतरा था। उसने वहाँ बैठ कर रोटी खायी। पास में दूसरे लोग लेटे हुए थे। वह भी भोजन के पश्चात् थोड़ा आराम करने को लेटा। छाती पर हाथ रखकर सोया तो उसे स्वप्न आया कि मैं भी घोड़े पर चढ़ा हूँ। बारात चली और उसकी शादी हो गई। स्वप्न में तो देर भी नहीं लगती। मन में जैसे संस्कार होते हैं वैसा सब स्वप्न में निर्मित हो जाता है।

वह शादी करके लौटा। दुल्हन आयी। दोनों एक साथ सोये। अब स्वप्न की दुल्हन कह रही है : ''जरा हटो, गरमी लग रही है।'' अब साधु बेचारा ब्रह्मचारी आदमी। उसने एक गुलाट खायी। थोड़ी देर बाद दुल्हन ने कोहनी मारी और कहा : ''खिसको न!'' ब्रह्मचारी ने ले ली दो-तीन गुलांट एक साथ और धड़ाक...धुम्म...। जा गिरा बावड़ी में। मजबूत युवान था। बावड़ी में पानी ज्यादा नहीं था। कुछ लगा तो नहीं मगर आवाज सुनकर लोग उठ पड़े। देखा कि आदमी बावड़ी में गिरा है। लोगों ने अपनी पगड़ियाँ खोलकर जोड़कर रस्सी बनायी और उस ब्रह्मचारी की ओर फेंककर बोले : '' आ जाओ बाहर। कुछ लगा तो नहीं?''

ब्रह्मचारी ने कहा : ''नहीं, मुझे कुछ नहीं हुआ। मैं तला-भूना खोराक खाता नहीं इससे बिमारियाँ मुझे नहीं हैं। नमक - चीनी भी खाता नहीं इससे हड्डियाँ भी मेरी कमजोर नहीं हैं कि टूट जायँ। मुझे तो कुछ नहीं हुआ। मैं तो बाहर आऊँगा ही, मगर पहले यह बताओ कि उस दुल्हे का क्या

हुआ जिसने सचमुच शादी की थी? मैंने तो स्वप्न में झूठमूठ शादी की तो इस कुँए में गिरा, तो जिसने सचमुच शादी की उसका क्या हाल हुआ यह मुझे बताओ।''

लोगों ने कहा : ''जिसने सचमुच शादी की है उसे अगर कोई गुरु मिल गये, सत्संग मिल गया, गुरुमंत्र मिल गया और भजन करेगा तो बच जायेगा नहीं तो वह भवसागर में गिरेगा। फिर तो वह क्या क्या बनेगा उसका कोई अंत नहीं।''

जो न तरे भवसागर नर समाज अस पाई।
सो कृत निंदक मंदमति आत्माहन गति जाई॥

जो भवसागर को नहीं तरता वह कृतघ्न है, मंदमति है। वह अधोगति को जायेगा। अगर भजन का रास्ता मिल गया, गुरु मिल गये, सत्संग मिल गया तो उसका बेड़ा पार हो जायेगा, अन्यथा पशु जैसी जिंदगी जियेगा।

'मैंने कुछ भी अपराध नहीं किया है फिर भी लोग अकारण ही क्यों मुझ पर क्रोध करते हैं?' ऐसा विचार साधक को नहीं करना चाहिए। उसे तो सोचना चाहिए कि 'मैंने पूर्वकाल में संसार रूप बन्धन से छूटने का उपाय नहीं किया है यही मेरा सबसे बड़ा अपराध है।' **– विद्यारण्य स्वामी**

अहंकार आदि दोषों का त्याग करने से चित्त ममता रहित हो जाता है, शान्ति प्राप्त होती है और ब्रह्मप्राप्ति के लिए योग्यता आती है।

'ऋषि प्रसाद' के सेवाधारी एजेन्टों एवं ग्राहकों के लिये महत्त्वपूर्ण सूचना

आपके सद्भावनापूर्ण सहयोग एवं उत्साहपूर्वक प्रयत्नों के फलस्वरूप 'ऋषि प्रसाद' के सदस्यों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। अत: सदस्य नामांकन एवं वितरण व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिये अभी तक दिया हुआ सदस्य क्रमांक रद्द करके जनवरी '९३ से नया स्थायी सदस्य क्रमांक दिया जा रहा है।

(१) प्रत्येक ग्राहक (सदस्य) को किसी भी पत्र-व्यवहार में या रूबरू पूछताछ में सदस्य क्रमांक लिखना या बताना अनिवार्य है। जो ग्राहक डाक द्वारा 'ऋषि प्रसाद' प्राप्त करते हैं वे अपने अंक पर लिखे हुए पते के ऊपर प्रथम लाइन में लिखे क्रमांक अवश्य नोट कर लेवें। जो ग्राहक अपना अंक सेवाधारी एजेन्ट से प्राप्त करते हैं वे सेवाधारी एजेन्ट से अपना सदस्य क्रमांक अवश्य ले लेवें। जनवरी-फरवरी '९३ के अंक से नये सदस्य क्रमांक प्रभावशील हो रहे हैं तथा पुराने सदस्य क्रमांक रद्द किये जा रहे हैं।

(२) जिन ग्राहकों की सदस्यता फरवरी '९३ में समाप्त हो रही है वे अपनी सदस्यता के नवीनीकरण अपने सेवाधारी के माध्यम से करवा लेवें। डाक द्वारा अंक प्राप्त करनेवाले सदस्य श्री योग वेदान्त सेवा समिति, संत श्री आसारामजी आश्रम, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ के नाम से M. O. अथवा क्रास डिमाण्ड ड्राफ्ट भेजकर नवीनीकरण करवा लेवें। **'ऋषि प्रसाद' का शुल्क चेक द्वारा स्वीकार नहीं किया जाता है।**

जागो अपने आपमें

साधक को 'सतयुगवादी' मत का नहीं होना चाहिए। 'सतयुगवादी' माने 'कभी सतयुग आयेगा' ऐसा मानना। साधक को 'सतयुगवादी' नहीं अपितु 'सतयुगकारी' होना चाहिये। अर्थात् इस तरह व्यवहार करना चाहिये मानो हम सतयुग में ही हैं। दान की तरह सुधार भी अपने घर से ही शुरू करना चाहिये। आत्म-सुधार से समाज-सुधार अपने आप हो जाता है। आत्म-सुधार पर जमे रहो और समर्पण से शक्ति प्राप्त करो।

दैनिक जीवन भी साधना का अंग है। आध्यात्मिक और लौकिक ये दो भिन्न क्षेत्र नहीं बल्कि एक ही है। उन्हें भिन्न समझना बड़ी भूल है, जिससे सारी कठिनाइयाँ पैदा होती हैं।

दैनिक जीवन भी साधना का अंग है। आध्यात्मिक और लौकिक ये दो भिन्न क्षेत्र नहीं बल्कि एक ही है। उन्हें भिन्न समझना बड़ी भूल है।

सभी धर्मों का उद्देश्य हमें अपनी सत्-चित्-आनंद की मूल स्थिति पर वापस ले जाना है। इस सीधे-सादे सत्य की सीख देने के लिये इतने सारे संप्रदाय, ग्रंथ, पंथ और तरीके केवल इसलिये बन गये हैं कि लोग जटिलता चाहते हैं, विस्तृत और उलझन भरी चीजें चाहते हैं। इससे वाद-विवाद खड़े हो जाते हैं।

इन सब भटकावों के बाद आपको केवल आत्मा पर ही वापस आना होगा। तो फिर यहीं, अभी से आत्मा में क्यों नहीं रहते?

मन को निश्चल करना है, यह बात यदि एक बार समझ में आ जाय, तो फिर अनंत अध्ययन की कोई जरूरत नहीं रहती। आत्मा अपने भीतर है, पुस्तकों में नहीं है। आत्मा को अपने प्रज्ञा के नेत्र से जानना चाहिये। वस्तुत: एक समय ऐसा आयेग, जब सब कुछ सीखा हुआ भूलना होगा।

कालातीत शुद्ध चैतन्य की अनुभूति मौन द्वारा ही सब से अच्छी तरह होती है। सिद्ध पुरुषों की संगति में बड़ी आसानी से शुद्ध चैतन्य का अनुभव किया जा सकता है।

*

प्रश्न - ध्यान तथा समाधि के बीच क्या भेद है?

उत्तर - मन की कल्पना और अपने प्रयत्न द्वारा जो साधा जाय, वह ध्यान और दोनों के बिना साधा जाय वह समाधि कहलाती है।

प्रश्न - मौन क्या है? यह शक्तिशाली दशा है या शक्ति विहीन?

उत्तर - मौन कोई शक्तिहीन प्रमाद की दशा नहीं है। बहिर्मुख प्रवृत्तियों के नाम से परिचित जगत के व्यवहार खूब परिच्छिन्न मन द्वारा बीच में टूटकर भी चालू रहते हैं। परंतु अंतर्मुख मौन दशा के नाम से परिचित आत्म-व्यवहार तो समग्र मन द्वारा ही अखंड रूप में चालू रहने से वह पूर्ण शक्ति है। दूसरे उपायों द्वारा नष्ट न होनेवाली पूर्ण शक्ति रूपी माया का इस मौन के द्वारा ही नाश होता है।

— रमण महर्षि

जिन लोगों का चित्त जप और ध्यान में नहीं लगता वे ही प्रश्न पर प्रश्न किया करते हैं। जिनका चित्त जप और ध्यान में लग जाता है उन्हें प्रश्नोत्तर के लिये अवकाश ही कहाँ है? जिसे भजन-ध्यान में आनंद आ गया, और तो क्या जिसमें थोड़ा-सा भी सत्त्वगुण आ गया वह क्यों किसीसे बातें करने लगे? किसीसे पाँच मिनट बात करने में भी उसे दु:ख मालूम होगा। वह समझेगा कि उसके अनमोल समय के पाँच मिनट बिना भजन के व्यर्थ ही बीत गये। आवारागर्दी के लोग ही फालतू बातें करते हैं। उत्तम साधक को गँवाने के लिये समय है ही कहाँ?

– स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती

टमाटर

आरोग्यशास्त्रियों का कहना है कि, टमाटर फल है। फल को पकाकर खाने से फायदा नहीं होता। फल कच्चा ही खाना चाहिए। टमाटर कच्चे खाने से बहुत ही फायदा होता है। नारंगी से भी टमाटर में विटामीन 'सी' का प्रमाण ज्यादा है। तदुपरान्त, विटामीन 'ए' का प्रमाण भी बहुत ज्यादा है। मैसूर की हॉस्पिटल के डॉ. अमान का कहना है कि एक कच्चे टमाटर में से १२ अंडों के बराबर विटामीन 'ए' मिलता है। अथवा ७ चम्मच कोडलिवर आईल या ५० चम्मच मक्खन या १५ कप गाय के दूध के बराबर विटामीन 'ए' मिलता है। टमाटर को पचने में दो घंटे लगते हैं।

१०० ग्राम टमाटर में करीब ४२ मिलिग्राम विटामीन 'सी' एवं विटामीन 'बी' और 'डी' भी होता है। टमाटर में मेंगेनिज नाम का खनिज है जो पाचन कार्य में सहायक है और रक्त का शुद्धिकरण भी करता है।

सर्दियों में बच्चों को हररोज सुबह करीब २०० ग्राम टमाटर का रस पिलाने से शरदी से रक्षा होती है। रक्त बढ़ता है और कमजोरी दूर होकर ताकत बढ़ती है। विटामीन 'ए' के कारण आँख की कमजोरी दूर होती है और आँखें अच्छी रहती हैं।

डॉ. अमान कहते हैं कि सुबह में खाली पेट टमाटर का ताजा कच्चा रस पीने से पेशाब का इन्फेक्शन यानी कि मूत्रमार्ग में जो जीवजंतु हों तो वे भी सफा हो जाते हैं।

डायब्टीज के दर्दी सुबह में एक प्याला टमाटर का रस पी ले तो इससे उनका वजन कम हो जाता है। शरीर में सुस्ती, सुस्त लिवर, पिलिया, अपचा, पेट का गैस, छाती की गबराहट आदि रोग दूर हो जाते हैं। पित्त के दर्दीयों को टमाटर का रस, काली मिर्च और सिंधव नमक या संतकृपा चूर्ण मिल सके तो सबसे उत्तम, वह डाल कर पीने से कोई भी तकलीफ दूर होती है।

टमाटर में कुदरती पोटॅशियम के क्षार होते हैं। पुराने जमाने में आज की दवाइयों की जगह टमाटर थे। टी.बी. के मरीज को शहद के साथ इलायची का पाउडर मिलाकर टमाटर का रस देते थे या घी में लसून को छोंककर टमाटर का रस, शहद डालकर देते थे और रोगमुक्त करते थे। ऐसे गुणकारी टमाटर का रस, हलदी और सिंधव नमक डालकर देने से उसके रक्त में स्थित 'इयोसिनोफिलिया' के तत्त्व कम हो जाने के कारण दर्दी अच्छा होने लगता है।

टमाटर के पौधे में से टॉमेटाईन नाम का आल्केलोइड निकलता है। कच्चे हरे टमाटर में भी यह रसायन होता है। यह रसायन चर्म के रोगों पर असरकारक है। कच्चा, हरा टमाटर खुजली पर घिसने से खुजली मिटती है।

गर्भवती औरत को या स्तनपान करनेवाले बच्चे की माँ को पक्के लाल टमाटर पकाये बिना ही खाने चाहिए। इससे उसके शरीर की देखभाल अन्य दवाइयों की अपेक्षा ज्यादा अच्छी होती है। गर्भवती औरतों में रक्त की कमी महसूस होती हो तो उनके लिए टमाटर रक्तवर्धक एवं ताकत देनेवाले सिद्ध होते हैं। टमाटर रुचिकारक और पाचन शक्ति बढ़ानेवाले हैं। अत: गर्भवती और छोटे बच्चे वाली औरतों को टमाटर ज्यादा फायदा करता है।

मस्तिष्क की कमजोरी में और चक्कर आते हों तब

रात्रि को ११ या २१ बादाम पानी में भिगो दें। सुबह में बादाम का छिलका निकालकर बादाम को पिसकर, तीन छोटी इलायची, तीन काली मिर्च डालकर दूध के साथ

उबालकर ठंडा करके आठ-दस दिन पीना चाहिए। डायब्टीज न हो तो सक्कर डालें। बादाम को जितनी ज्यादा पिसोगे उतनी ज्यादा गुणकारक होगी।

सारा राष्ट्र कोढ़, कैंसर, चर्म रोगों का घर होगा...

हिन्दुस्तान लीवर के भूतपूर्व निर्देशक जे. सी. चोपड़ा ने प्रधानमन्त्री को भेजे पत्र में हिन्दुस्तान लीवर और लिप्टन इण्डिया द्वारा भारतीय जनता के प्रति किये जा रहे असहनीय, जघन्य एवं शर्मनाक अपराधों को... आँखों को उघाड़नेवाले सनसनीखेज तथ्यों को ससाहस उजागर किया है और प्रार्थना की है कि इन कुकृत्यों को युद्धस्तर पर बंद करें नहीं तो समस्त राष्ट्र कुष्ठ, कैन्सर तथा अन्य चर्म रोगों से ग्रसित होता रहेगा और एक दिन कुष्ठरोग तथा कैन्सर का घर हो जायेगा। अत: भारत में ऐसी राष्ट्रद्रोही कंपनियों के संचालन को बन्द करें और भारत को आनेवाले विप्लव से बचायें।

(पूरा पत्र गोधन के जुलाई '९२ के अंक में प्रकाशित हुआ है। यहाँ पर कुछ अंश जनता की जानकारी के लिये दिये जाते हैं। -प्रकाशक)

हिन्दुस्तान लीवर की चर्बी की वास्तविक खपत निम्न प्रकार १५०५०० टन है।

साबुन और डिटर्जन्ट बार	१३९००० टन
देशी घी (अनिक) में मिलावट	२००० टन
संशोधित ग्लिसरीन	३५०० टन
टुथपेस्ट, फेस क्रीम	२००० टन
ग्लिसरीन से बने उत्पादन	४००० टन

इन चर्बीयुक्त पदार्थों की बिक्री के लिए किये जानेवाले विज्ञापनों का मतलब होता है कि :

अपना चेहरा गाय की चर्बी से धोयें—लक्स और लाईफबॉय साबुन के प्रयोग से।

दाँत व मुँह चर्बी से साफ करें — क्लोज अप का प्रयोग कर के।

गाय की चर्बी में स्नान करें — लाईफबॉय, लक्स, श्रृंगारिक साबुनों के प्रयोग से।

अपने चेहरे पर गाय की चर्बी लगायें — केयर एवं लवली क्रीम का उपयोग करके।

ईश्वर की प्रार्थना करें — चर्बीयुक्त देशी घी से दीये और धूप जलाकर।

चर्बीयुक्त प्रसाद पावें — चर्बी की मिलावट के देशी घी अनिक से।

चर्बी से कपड़े धोयें — सनलाईट साबुन से।

चर्बी से बना भोजन खायें — चर्बी मिश्रित अनिक घी से।

अत: तथाकथित सुधरे हुए भाई-बहनों को कुष्ठ, कैन्सर और चर्म रोग उत्पन्न करनेवाले, मन को मलिन करने वाले क्रीम, पेस्ट और अशुद्ध साबुन से बचना चाहिए। शुद्ध नीम का साबुन और नीम का दातुन इस्तेमाल करना हितकारक है।

क्रीम, पाउडर और ऐसे अशुद्ध साबुन से अनजाने में भी बच्चों के साथ अन्याय मत करना।

टूथ-पेस्ट में कुछ अपवित्र पदार्थ भी मिलाये जाते हैं। उसकी अपेक्षा नीम का दातुन ज्यादा स्वास्थ्यप्रद है। नीम का दातुन अच्छी तरह चबाकर, दाँतों को घिसकर, अंत में उसके टूटे हुए रेसे हटाकर दातुन को फिर से चबाकर उसका रस खाली पेट में जाने दो। इससे वह बहुत ही फायदा करता है। बुखार, मलेरिया और पेट के रोग जल्दी नहीं होगे। रोगप्रतिकारक शक्ति भी बढ़ेगी। मिल सके तो नीम के ३०-४० कोमल पत्ते और ५-७ तुलसी के पत्ते सुबह में चबाकर फिर पानी पियो। उस पर तुरंत दूध नहीं लेना चाहिए। अल्पाहार के बाद दूध ले सकते हैं।

च्यवनप्राश

बाजार के च्यवनप्राश को तो दूर से ही नमस्कार करना भाई! आप अगर चाहें तो आँवले का शुद्ध च्यवनप्राश बनायें। चाँदी के वरक बैल की आँतों का उपयोग करके बनाये जाते हैं, अत: चाँदी के वरकवाली मिठाइयाँ त्याज्य हैं।

चाँदी का वरक बनाने के लिए पशुओं की आँतों का उपयोग किया जाता है इसलिए वह अशुद्ध होने के कारण सुज्ञ साधक उसका उपयोग नहीं करते।

(१)

'जीवनघातक मार्ग से मैं कैसे बचा...?'

मेरी कहानी आज के बिनजवाबदार, भोगविलास के पूजारी, अज्ञानी डॉक्टर, प्रोफेसरों के बेवकूफी से भरे जीवन-घातक मार्गदर्शन के खिलाफ एवं पूज्य गुरुदेव के एक ही दर्शन-सत्संग से मिली हुई जीवनउद्धारक शक्तिसंचरण की कहानी है।

मैं अजमेर जिले के केकड़ी तहसील के खवास गाँव का निवासी हूँ। मैंने B. SC. की परीक्षा १९९१ में पूर्ण की। अब मैं प्री.मेडिकल टेस्ट की तैयारी कर रहा था। मुझे स्वप्नदोष कई बार हो जाता था। मैने हमारे लेक्चरर साहब जोकि जननविद्या के बारे में पढ़ा रहे थे, उनसे इसके बारे में पूछा। उन्होंने डॉक्टर को बताने की सलाह दी।

योगयात्रा

डॉक्टर ने मुझे कहा : ''वीर्य कोई कीमती चीज नहीं है। जिस प्रकार प्लास्टिक की बोतल जब पानी से भर जाती है तब अगर उसमें ज्यादा पानी डाला जायेगा तो पानी बाहर बह निकलेगा। वैसे ही वीर्य भी शरीर में बढ़ जाय तो बाहर निकलना चाहिए। हप्ते में एक-दो बार स्वप्नदोष हो जाय तो कोई बड़ी चिंता की बात नहीं है।''

उसके बाद मैंने एक प्रयोग किया। मैंने किसी एक लड़की से आँख मिलाई और उसका चिन्तन किया। बस, एक सेकंड के चिन्तन से ही वह लड़की मेरे दिलोदिमाग में छा गई। मैं जिस पाठ को एक घंटे में याद कर पाता था, उसे अब दस दिनों में भी याद नहीं कर सका था। मुझे उस लड़की का चिन्तन दिन-रात सताने लगा। अब तो मैं चैनहीन था।

मैं डॉक्टर के पास गया। मैं खुद डॉक्टरी परीक्षा दे रहा था तो मुझे डॉक्टर पर विश्वास करना ही पड़ता था। डॉक्टर ने मुझे सात दिन के लिए दवाई की गोलियाँ दीं, उससे मुझे एक-दो दिन तो शांति मिली, परंतु बाद में मेरा शरीर और कमजोर हो गया। मैं इतना कमजोर हो गया, हालत इतनी खराब हो गई कि मैं न दिन में नींद ले सकता था न रात में। गोलियों की वजह से मेरा वीर्य बाहर निकलता गया और मैं अधिकाधिक कमजोर होता गया। विषयी कीड़े जैसे बेदरकार, बेजवाबदार, मूर्ख डॉक्टर की शिक्षा और दवाई से मैं मोत के नजदीक आ गया था।

परंतु परमात्मा ने मेरे लिए कुछ और ही सोच लिया था। परमात्मा मुझे विषय-विकारों की गंदगी एवं सर्वनाश की ओर धकेलना नहीं चाहते थे।

इन्हीं दिनों पूज्यपाद गुरुदेव श्री आसारामजी बापू अजमेर में प्रवचन दे रहे थे। सुभाष उद्यान में सत्संग समारोह का आखिरी दिन था। मैं किसी अगम्य शक्ति से संचलित होता हुआ घूमते घामते वहाँ पहुँचा। प्रवचन पूर्णाहुति के आखिरी ५-७ मिनट बाकी थे। मैंने गुरुदेव के दर्शन किये, प्रवचन सुना और समाप्ति में युवानों के लिए खास बनी पूज्यश्री की दो पुस्तकें 'यौवन सुरक्षा' और 'योगासन' खरीदकर घर आया। उन दोनों को मैंने बार-बार पढ़ा। अब मुझे जीवन-सत्त्व का कुछ ज्ञान हुआ, वीर्य की अमूल्यता और शरीर में उसकी महत्ता का बोध हुआ। डॉक्टरों ने मुझमें जो विनाशकारी भ्रमणा डाल रखी थी उसका विध्वंस हुआ। अब मैं योगाभ्यास में लग गया। मैंने वीर्यरक्षा की युक्तियाँ पूज्यश्री की पुस्तक 'यौवन सुरक्षा' में से पढ़कर सीख ली और उसके अभ्यास से आज मैं स्वस्थ हूँ। मेरे खोखले शरीर पर कोई दवा काम नहीं कर रही थी और आज मैं गुरुजी की कृपा से, आधी घड़ी के सत्संग से एवं वीर्यरक्षण से जिंदा हूँ। मैंने डॉक्टरी अभ्यास छोड़ LL.B. प्रथम वर्ष में प्रवेश पाया है।

उस दिन से मेरा हृदय भी जैसे परिवर्तित हो गया। भोग-विलास के विचार छूट गये और भगवद्भक्ति का उदय हुआ। मेरी यादशक्ति का भी अब विकास हुआ है। मुझे अब तो दिन-रात गुरुजी का ही ध्यान-चिंतन लगा रहता है। मुझे हरघड़ी होता रहता है कि गुरुजी के दर्शन फिर कैसे हों? मुझे मालूम पड़ा कि अहमदाबाद में ध्यान योग शिविर है। अब मैं शिविर में आ चुका हूँ। अब गुरुचरणों में मेरी यही प्रार्थना है कि : 'गुरुदेव ! मेरी बुद्धि तीक्ष्ण करें, आध्यात्मिक शक्तियों को जगायें। मैं परमात्मा का स्मरण

करके अपना कल्याण कर लूँ और समाज एवं देश की भी भली प्रकार यथायोग्य सेवा कर सकूँ।'

अन्य युवक-युवतियाँ आज के भ्रामक पाश्चात्य पिशाची सिद्धांतों से बचें। वीर्यनाश करने के लिये खोखले तर्क तब तक सही लगते हैं जब तक सर्वधर्मसंमत ग्रंथ 'यौवन सुरक्षा' हाथ में नहीं आया। अतः युवक युवतियों से मेरी नम्र प्रार्थना है कि 'यौवन सुरक्षा', 'योगासन' और 'ईश्वर की ओर' पुस्तकें अवश्य पढ़ें। आपकी जीवन-नैया भी वीर्यपतन के गरकाव से बचकर कइयों को पार उतारने के काम आयेगी।

- सतीश सोनी

मु.पो., खवास, ता. केकडी, जि. अजमेर (राज.)

(२)

''देखो... देखो...! दोनों ओर श्रीकृष्ण और शिवजी के साथ मेरे गुरु पू. बापू मुझे मुक्तिदान देने आये हैं..."

मेरी लड़की कुमारी मेघना कक्षा ४ में पढ़ने के लिए मेरे मामा के यहाँ धोळी कुई गाँव (जि. सुरत) में रहती थी। मेरे मामा-मामी पू. गुरुदेव के साधक भक्त हैं। वे हररोज सुबह में पूजा-पाठ-माला आदि करते हैं। पू. बापू के मंदिर की साफ-सफाई बुहारी करते करते मेघना भी पू. बापू का स्मरण अत्यंत आत्मीयता से करती थी।

फरवरी '९२ में एक दुःखद अकस्मात् हुआ। स्टव सुलगाते वक्त मेघना बहुत बुरी तरह जल गई। उसे होस्पिटल में भरती करना पड़ा। चिकित्सा के दौरान मेघना के मुख में पूज्य बापू की धून 'मधुर मधुर नाम हरि हरि ॐ' निरन्तर चालू ही रहती थी। होस्पिटल में चिकित्सा पाँच दिन ली। अंतिम दिन मेघना की हालत अत्यंत गंभीर होने से अंगों का हलन-चलन भी असम्भव-सा बन गया। लेकिन पू. बापू के थोड़ी ही क्षणों के सेवाकार्य के फल स्वरूप सुबह के १० से शाम के ८ बजे तक (१० घंटे) असम्भव-सा होने पर भी निरन्तर मधुर कीर्तन धून ताली बजाकर बिस्तर में बैठकर मेघना ने चालू रखा। हर पल 'बापू आये... बापू आये... मुझे बापू लेने आये हैं और मैं अब बापू के साथ ही गाड़ी में बैठकर जाती हूँ। पप्पा ! मम्मी ! तुम बापू के सान्निध्य में बहुत जल्दी ही पहुँच जाना, बापू को याद करना, अन्यथा बाद में पछताना पड़ेगा।' ऐसा कहकर अंत समय में पप्पा-मम्मी को 'हरि ॐ' कहकर, 'पू. बापू के साथ गाड़ी में जा रही हूँ' ऐसा कहकर नश्वर देह छोड़कर पू. बापू के साथ एकाकार हो गई।

इस घटना के पहले मेरे घर में पू. बापू को कोई मानता न था। मेघना की अंत समय की प्रार्थना से अभी पूरा परिवार पूज्य बापू के सान्निध्य में ही रहता है।

हरि ॐ...

- हरिसिंह गेमलसिंह वांसीया

मु.पो. लींबाडा, ता. मांगरोल, जि. सुरत।

(३)

यादगार कृपा-झलक

दिनांक : १२-४-९२ के बाद श्री योग वेदान्त सेवा समिति, मांडल शाखा के अध्यक्ष डॉ. सोभागमल महात्मा एवं उनके परिवार की मंत्रदीक्षा की प्रथम वर्षगांठ के सुअवसर एवं जुलाई ९१ में पूज्यश्री का मांडल में सत्संग होने के बाद मांडल में ही भूमिप्राप्त आश्रम निर्माणविधि को गति प्रदान करने हेतु संत श्री आसारामजी आश्रम, मांडल में विडियो सत्संग एवं महाप्रसाद का आयोजन किया गया था। सुंदर विशाल शामियाना लगाया गया था। करीब पाँच छः सौ भाई-बहन पूज्य गुरुदेव के विडियो सत्संग से लाभान्वित हो रहे थे। तब यकायक कहीं से भँवरमाल (मधुमक्खी से बड़ी कंटीली मक्खी) का टोला पंडाल में प्रविष्ट हो गया। अगर परमात्मा एवं सद्गुरु की कृपा न होती तो उसने सेंकड़ों भक्तों को जख्मी किया होता। मगर पंडाल में विराजित किसीको भी उसने छुआ तक नहीं बल्कि पसार हो गई जबकि पंडाल से बाहर आने-जाने वाले कइयों को काट खाया।

वाह मेरे मालिक ! आपकी कृपा का क्या कहना? सद्गुरुदेव स्वामी की अनन्य कृपा है कि उनके नाम से खींचे

चले आये लोगों को भी भँवरमाल के त्रास से मुक्ति मिल गई। भजन-कीर्तन—ध्यान में ऐसा महसूस हुआ कि पू. बापू सशरीर होते हुए भी अशरीर हैं। एक जगह होते हुए भी सर्वत्र उनके सान्निध्य का आभास होता है। – **डॉ. सोभागमल महात्मा**
मांडल, जि. भीलवाड़ा (राज.)

सत्संग महिमा

सत्संग महिमा अपरम्पार।
विरला पाए इसका पार॥
सत्संग महिमा वेदशास्त्र गावें।
मनुष्य विचारों में परिवर्तन लावे।
आधि व्याधि सब दूर भगावे।
प्रतिदिन मनन कर हो उद्धार।
सत्संग महिमा अपरम्पार।
विरला पाए इसका पार॥
सहज-सहज यह प्रभाव दिखावे।
मुक्ति-द्वार का भेद बतावे।
सत्संग की कैसी माया।
बाल्मीकि भये रामायणकार।
सत्संग महिमा अपरम्पार।
विरला पाए इसका पार॥
सत्संग मनन संस्कार बनाये।
उच्च पद को पात्र बनाये।
ध्रुव प्रहलाद हैं इसके साक्षी।
जन्म न होवे बारम्बार।
सत्संग महिमा अपरम्पार।
विरला पाए इसका पार॥
शिवजी करें अथक गुणगान।
पार्वती से करें बखान।
बिन सत्संग विवेक न होई।
समझ सके कोई समझन-हार।
सत्संग महिमा अपरम्पार।
विरला पाए इसका पार॥

नरेश अनेजा 'किंकर'

Registered with Registrar of Newspapers for India Under No. 48873/91

करीब बाईस साल पहले बिल्कुल एकान्त में लोक सम्पर्क से अलिप्त रहकर निरन्तर तपस्यामय जीवन बिताते हुए... ब्रह्मानन्द में निमग्न प्रातःस्मरणीय पूज्यपाद संत श्री आसारामजी महाराज।